RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. / भोपाल / 261 / 2015-17 प्रकाशन तिथि 28 मई 2016

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका जून 2016

वापसी

सूरज लौट रहा है
अपने लोक में
पक्षी लौट रहा है
घोंसले में

पानी पर डोलती
नाव की तरह
रात में डूब रही है
शाम

संगीता गुन्देचा

मूल्य ₹ 50

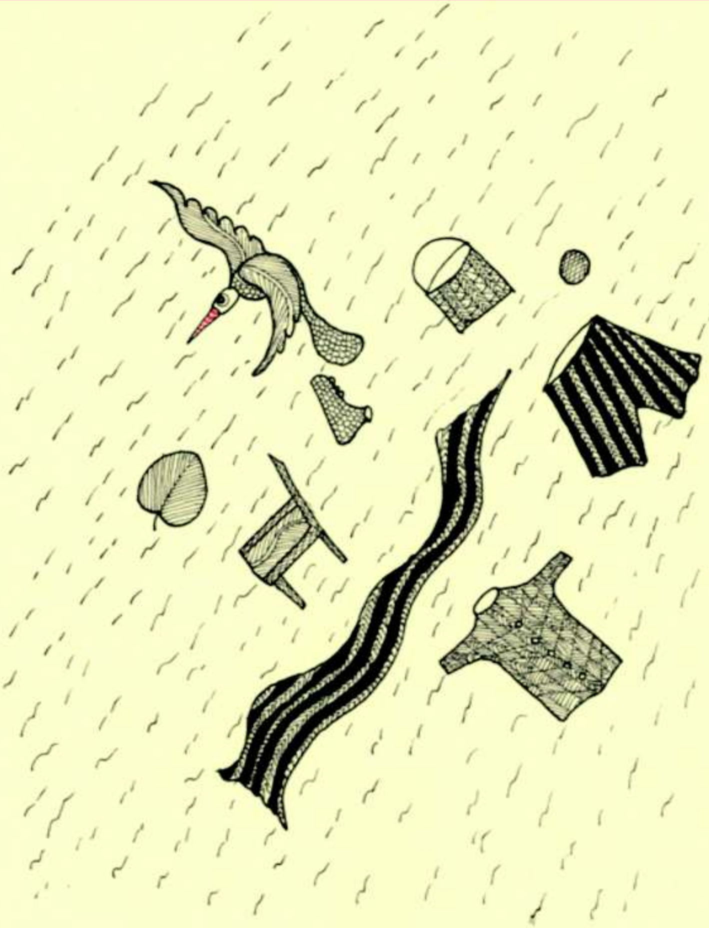

हवा में उड़ा
उड़ा तो उड़ा
उड़ा वो क्या
उड़ा जो उड़ा?

गड़प-गड़प
- सुष्मिता बैनर्जी
चित्रः मानसिंह

धम से गिरा
गिरा तो गिरा
गिरा वो क्या?
गिरा जो गिरा?

क्या यह सच?
या यह गप?
जवाब कौन देगा
गड़प-गड़प!

चकमक:0755- 4252927 9425010115 chakmak@eklavya.in

चकमक कविता कार्ड

*पढ़ो और फिर चाहो तो अपने दोस्त को
इसी कार्ड के दूसरी तरफ
एक चिट्ठी लिखकर
भेज दो।*

कविता कार्ड के
चार गुच्छे।
एक गुच्छे में
बारह कविताएँ।
एक गुच्छे की कीमत है
सिर्फ पचास रुपए।

इन्हें
मँगाने के लिए तुम
चकमक के पते पर
लिख सकते हो। या हमें फोन कर सकते हो।
या चाहो तो सीधे ऑनलाइन मँगा लो -
http://www.eklavya.in/pitara/chakmak_kavita_cards

बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

अंक 357 जून 2016

इस अंक में

4 एक बेटी का सपना - स्नेज़ना सूश
8 अगर मगर - गुलज़ार
10 प्यारे भाई रामसहाय - स्वयं प्रकाश
12 कब्रिस्तान के पत्थर - प्रियम्वद
15 माथापच्ची
16 और भेड़िए क्या सोचते होंगे...- कार्ल सफीना
20 पूड़ियों की गठरी - कृष्ण कुमार
24 मरीचिका - उदयन वाजपेयी
26 मखमल में लिपटे जूते... - दिलीप चिंचालकर
28 एक था हाजी एक था नाजी - स्वयं प्रकाश
29 चश्मा नया है : झाँकी - रचिता बमनिया
32 मेरा पन्ना
36 क्या कीट सूँघते और स्वाद भी लेते हैं - भरत पुरे
39 नींद की थपकी - प्रभात
40 सिएटल की चिट्ठी - प्रस्तुति : शम्पा शाह
44 बिल्लू गोल मुटल्लू - अमिताभ मुखर्जी
46 चन्द्रमा - आकाश के कटोरे में पिघलता - उदयन वाजपेयी
47 पहेली : भेजा ट्राई
48 चित्र पहेली - कविता तिवारी

पतंगा

इरीना आन्द्रीवा के ऊनी खिलौने

इन खिलौनों में रूसी इरीना के बचपन की यादें, कहानियाँ दिखती हैं। अपने खिलौने "पतंगा" के बारे में वो लिखती हैं –

मैं एक पतंगा हूँ। माँ बोली थीं कि अपना ख्याल रखना इसलिए मैं दुबका रहता हूँ...अलमारी में, जूतों, कपड़ों में, तस्वीरों के पीछे। यहाँ इस गमले के पीछे छिपा बैठा हूँ – चुपचाप। चौकस पतंगा मैं। तुम्हें दिख रहा हूँ?

आवरण चित्र
जगदीश जोशी

हाशिए के चित्र
प्रशान्त सोनी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी
मिताली अहीर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
वरुण ग्रोवर
प्रभात
मिहिर
कमलेश यादव
ब्रजेश यादव

तक्षशिला सोसाइटी के वित्तीय सहयोग से विकसित

एक प्रति :	50.00
वार्षिक :	500.00
तीन साल :	1350.00
आजीवन :	6000.00

सभी डाक खर्च हम देंगे।

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोनः (0755) 4252927, 2550976, 2671017
फैक्सः (0755) 2551108, e mail - chakmak@eklavya.in, e mail - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

प्यारे पापा

एक बेटी का सपना

स्नेज़ना सूश

प्रस्तुति-
अरविन्द गुप्ता

पापा सपनों में भी हमें बचाने के लिए
हमेशा तैयार रहते हैं।
चाहे वे स्कूल के
बदमाश लड़के हों
या हमारी चारपाई
के नीचे घुसा राक्षस।

पापा हमारे लिए मुश्किल से मुश्किल
काम करने से भी नहीं डरते।
यहाँ तक कि वो चोटी बनाना
सीखने से भी
पीछे नहीं हटते।

जब बेटी पापा के
साथ होती है तो
उसे लगता है
जैसे वह दुनिया की
छत पर पहुँच गई है।

एक भारी भरकम पापा
अपनी प्यारी बेटी के लिए
बड़े आराम से
घुटकन बन जाते हैं

हमारी पार्टी में शामिल होने के लिए
पापा हमेशा समय निकाल लेते हैं।
चाहे वे कितने ही व्यस्त क्यों न हों।

उन्हें हमेशा पता रहता है
कि हमें क्या अच्छा लगता है।

उन्हें बाय कहना
इसलिए इतना
मुश्किल हो जाता है।

वे हमारे साथ
खेलते हैं।

और हमें कल्पनालोक की
सैर कराते हैं।

पापा कुछ भी
कर सकते हैं।
यहाँ तक कि
पागली और
अजीबोगरीब
चीजें भी।

और सचमुच मुश्किल चीजों का
सामना करने में वे
हमारी मदद करते हैं।

मस्ती करने में वो
हमेशा आगे रहते हैं।

पापा अपनी बेटियों का ख्याल
रखते हैं और उन्हें प्यार करने में
अपनी जिन्दगी लगा देते हैं।

स्नेज़ना सूश उक्रेनी कलाकार हैं। उनके ये चित्र इंटरनेट पर खूब धूम मचाए हुए हैं...

अगर मगर

चित्रः अतनु राय

अगर-मगर के लिए तुम्हारे सवालों का इन्तज़ार है..

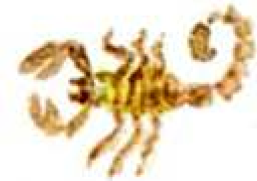

1. बिच्छू घास छू जाने पर जानवरों को भी उतना ही दर्द/जलन होती होगी क्या, जितनी हमें होती है?

– खुशी, आठवीं, राजकीय हाईस्कूल भीटाई, पौड़ी गढ़वाल

जवाबः अगर उतनी ही मोटी खाल हो तुम्हारी, तो नहीं होगी।

2. आपके दिल के करीब सबसे करीब कौन इंसान है?

– प्रत्युष, चौथी, डी.पी.एस. पटना

जवाबः इस वक्त तो सिर्फ पटना के “प्रत्युष” हैं, चौथी में पढ़ रहे हैं।

3. क्या दुनिया में भूत होते हैं? क्या आपने देखे हैं?

- गुरलाल सिंह, आठवीं, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, धर्मपुरा, सिरसा, हरियाणा

जवाबः हाँ, यूँ हुआ।
“भूत कभी देखा है क्या?”
साथ की सीट पे बैठे हुए
उस शख्स ने मुझसे पूछा था
मुँह फेर के हँस दिया था मैं
और मुड़ के देखा तो
उस सीट पे कोई नहीं था।

4. क्या पहले आदमियों की पूँछ होती थी?

– जग्गो कौर, आठवीं, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, धर्मपुरा, सिरसा, हरियाणा

जवाबः सिर्फ आदमियों की नहीं, तब औरतों की भी होती थी जग्गो कौर जी।

5. दुनिया में सबसे ताकतवर कौन है?

– अमरपाल सिंह, आठवीं, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, धर्मापुरा, सिरसा, हरियाणा

जवाब: सवाल करनेवाला। जवाब न दो तो बेंच पर खड़ा कर देता है।

6. चींटियाँ हर वक्त किसकी तलाश में रहती हैं?

– मालविन्द्र कौर, आठवीं, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, धर्मापुरा, सिरसा, हरियाणा

जवाब: हाथी की। उसके कान में कुछ कहना है उसे।

7. जब हम पाठ याद करते हैं तो याद क्यों नहीं होता? क्या दिमाग कम है?

– गुरजीत सिंह, आठवीं, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, धर्मापुरा, सिरसा, हरियाणा

जवाब: दिमाग कम नहीं गुरजीत सिंह, ध्यान कम होता है।

8. एक अच्छा चित्रकार बनने के लिए क्या करना चाहिए?

– केशव अग्रवाल, सातवीं, डी.पी.एस, सूरत, गुजरात

जवाब: चित्र बनाने चाहिए। और बनाते रहना चाहिए। और बनाते बनाते ही एक दिन बड़े चित्रकार बन जाओगे। तब लोग तुम्हारा चित्र बनाएँगे।

9. आपकी बुरी आदत कौन-सी है?

– कनुप्रिया व्यास, नौवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल

जवाब: जो मुँह में आता है काट खाता हूँ, उँगली और चम्मच को छोड़कर।

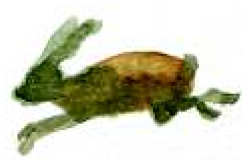

10. सर, क्या आपने कभी फूल को चड्डी पहने देखा है?

– आसमी शर्मा, आठवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल

जवाब: एक बार फूल जैसे मोगली को देखा था।

11. सर, मुझे व्याकरण पड़ने में बहुत दिक्कत होती है। जो भी पढ़ती हूँ भूल जाती हूँ। तो मैं क्या करूँ?

– फिरदौस जहाँ, नवीं, राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय, कोटाबाग, नैनीताल

जवाब: कुछ और पढ़ो जिसमें दिल लग जाए। व्याकरण सिर्फ दिल लगी के लिए पढ़ लिया करो।

प्यारे भाई रामसहाय

स्वयं प्रकाश

हमारा स्कूल जिस ज़मीन पर बना था वहाँ पहले एक बुढ़िया का खेत था जिसे सब नानू की माँ कहते थे। नानू की माँ की झोंपड़ी स्कूल के पीछे ही थी जहाँ वह अपने अधपगले पोते के साथ रहती थी। बुढ़िया का लड़का नानू तो बहुत पहले मारपीट के किसी मामले में जेल जा चुका था और सज़ा पूरी होने पर भी घर नहीं लौटा था। फिर पता नहीं कैसे लोग बुढ़िया के पोते को भी नानू कहने लगे और बुढ़िया "नानू की माँ" ही बनी रही।

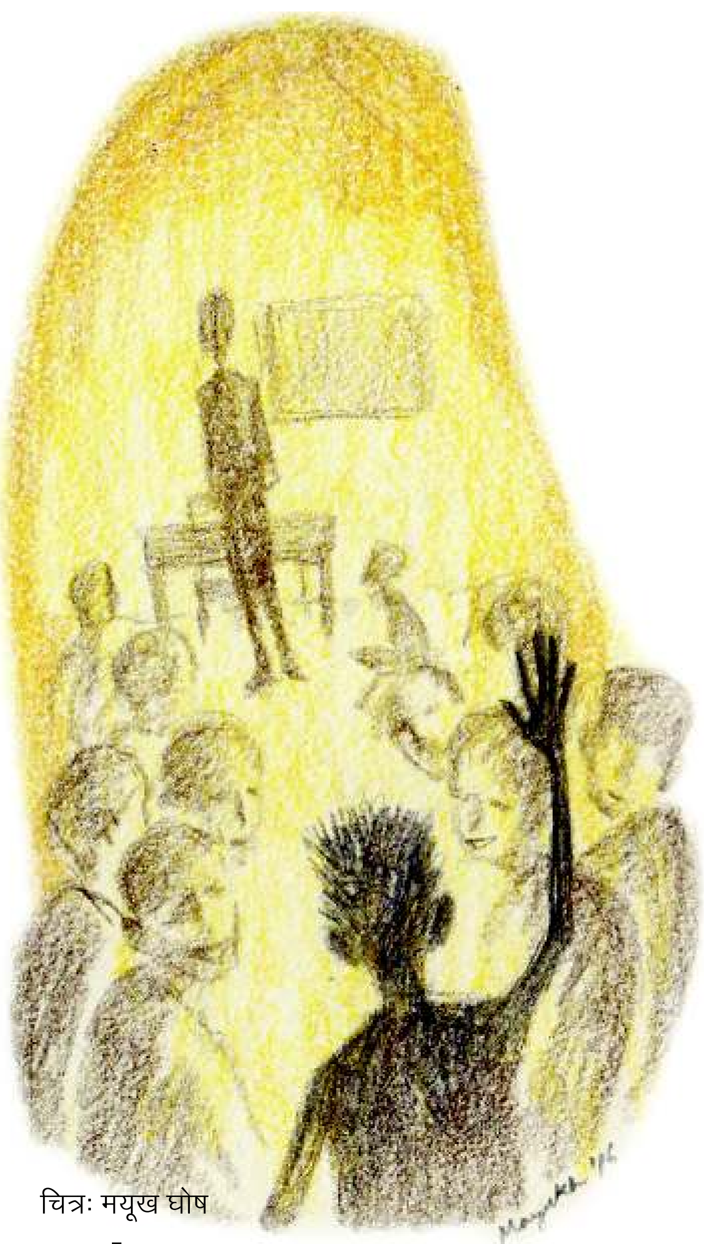

चित्रः मयूख घोष

नानू की माँ कभी-कभी नानू को साफ कपड़े पहनाकर, थैली में स्लेट-पेंसिल रखवाकर स्कूल ले आती और अध्यापकों से विनती करती कि वे नानू को भी अपनी कक्षा में बैठा लें। चार अक्षर सीख जाएगा तो ज़िन्दगी गुज़ार लेगा, वरना मैं इस बिना माँ-बाप के बच्चे को किसके भरोसे छोड़कर जाऊँगी? लेकिन उसे कभी भी किसी ने कक्षा में नहीं बैठने दिया।

आखिर मुआवज़े के लिए चक्कर लगाते-लगाते एक दिन बुढ़िया मर गई और फिर नानू की किसी ने कोई खबर नहीं ली कि ज़िन्दा है या मर गया और अगर ज़िन्दा है तो किस हाल में है।

लेकिन नानू मन ही मन इस स्कूल पर अपना पुश्तैनी अधिकार समझता था। वह कभी भी अपनी खाकी थैली उठाए आ जाता और किसी भी कक्षा में घुसकर पीछे ही पीछे बैठ जाता। उसके दाँत थोड़े बाहर को निकले हुए थे, आँख भेंगी थी, होंठ टेढ़े थे, बाल खड़े रहते थे और मुँह के कोने से लार टपकती रहती थी। वह हँसता था तो उसके मुँह से ऐसी आवाज़ निकलती थी जैसे हिचकियाँ लेकर रो रहा हो। उसकी हरकतों पर सारी क्लास ठहाके लगाकर हँसती थी। खूब मनोरंजन हो जाता था। और सबको हँसाकर नानू बहुत खुश होता था। मानो वह यही करने आया हो।

नानू क्लास में आकर चुपचाप बैठ ही नहीं जाता था बल्कि हाथ उठाकर इजाज़त लेकर प्रश्न भी पूछता था। एक बार उसने पूछा, "सर, ये जो तिरंगा झण्डा है न तो उसमें गरीब लोगों का रंग कौनसा है?" एक बार हमारी कक्षा में आया, पूरे पीरियड में चुपचाप बैठा रहा और अन्त में पूछा, "सर! पन्द्रह अगस्त को जब देश आज़ाद हुआ तो मिठाई बँटी थी। बँटी थी या नहीं? तो हमें तो किसी ने खिलाई ही नहीं! जबकि उस दिन तो हम घर में ही थे। मैं और दादी! पूरे दिन।"

लड़के हँसने लगे तो वह उन्हें डाँटते हुए बोला, "दाँत क्या निकाल रहे हो? ये इम्पोर्टेंट है। इस साल फायनल परीक्षा में आ सकता है।"

सर ने कहा, “सॉरी नानू, मिठाई खत्म हो गई थी। तुम ऐसा करो, पैसे ले लो। बाज़ार से मिठाई लेकर खा लेना।” और जेब से अठन्नी निकालकर नानू को देने लगे। नानू बोला, “आठ आने! आठ आने में क्या आता है आजकल?” फिर सर ने उसे दो रुपए का नोट निकालकर दिया जिसे लेकर नानू खुशी-खुशी चला गया।

* * *

एक दिन प्रार्थना के बाद घोषणा हुई कि एनसीसी, एसीसी और स्काउट के सारे बच्चे शाम को पाँच बजे वर्दी पहनकर ग्राउण्ड में आएँ। ये नहीं बताया गया कि क्यों।

स्कूल की छुट्टी होती थी दो बजे। घर जाकर खाना खाकर हम आराम करते थे। फिर होमवर्क और फिर खेलने। उस दिन वर्दी पहनकर स्कूल ग्राउण्ड पर पहुँचे तो देखा कि बहुत सारे स्कूलों के बच्चे वर्दी पहनकर आए हुए हैं। हमें परेड की तरह खड़ा कर दिया गया। हमारा दल पीछे ही पीछे था। सबसे आगे केम्ब्रिज कॉन्वेंट स्कूल की टुकड़ी थी जिसकी टीचर बार-बार बच्चों के मुँह पौंछ रही थीं और बच्चों के मुँह पर पाउडर लगा रही थीं। इस टुकड़ी के पीछे कार्मेल कॉन्वेंट का बैण्ड था। फिर हम जैसे स्कूलों की टुकड़ियाँ।

किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है? होल्कर सर आए तो सबने उनसे पूछा, लेकिन कुछ बताने की बजाय वह ये कहकर चले गए कि सब दाहिने मुड़ें तो तुम भी दाहिने मुड़ जाना और आगे की टुकड़ी मार्च करे तो तुम भी मार्च शुरू कर देना।

इसी समय कहीं से नानू प्रगट हुआ और उसने बताया कि ये कोई परेड-वरेड नहीं है, फिल्म की शूटिंग चल रही है। डेज़ी ईरानी आई है। अभी-अभी कार से उतरी है। वो तुम्हारी परेड के आगे-आगे चलेगी, मेरे साथ।

हमें समझ में नहीं आया कि नानू सही कह रहा है या हमेशा की तरह बहक रहा है।

लेकिन क्या करते! आगे जाकर देख भी नहीं सकते थे।

फिर जब तक हम मार्च करते हुए आगे तक पहुँचे शूटिंग खत्म हो चुकी थी और अपने ज़माने की बेहद लोकप्रिय बाल कलाकार डेज़ी ईरानी भी कार में बैठकर जा चुकी थीं।

इस कहानी का क्लाइमेक्स तब आया जब चार महीने बाद वह फिल्म शहर की रीगल टॉकिज़ में लगी। फिल्म में इस परेड का दृश्य बिलकुल वही था, साथ में बड़ा खूबसूरत एक गाना बज रहा था। परेड का नेतृत्व डेज़ी ईरानी कर रही थीं लेकिन दर्शकों का ध्यान डेज़ी ईरानी पर नहीं, बैकग्राउण्ड में बेहद अजीब और ऊटपटाँग नाच करते हुए नानू पर था। पता नहीं कहाँ से नानू में इतनी ताकत और फुर्ती आ गई थी कि वह बिजली की तरह उछल-उछलकर टेढ़े-मेढ़े हाथ-पैर फेंक रहा था। बीच-बीच में गिर भी जाता था, लेकिन हँसते हुए फिर खड़ा हो जाता और मस्ती से अपना ऊटपटाँग नृत्य शुरू कर देता था। इस दृश्य को देखकर दर्शकों का हँस-हँसकर बुरा हाल हो जाता था। सिनेमा हॉल में तालियाँ पिटने लगती थीं। सारे शहर में यह बात फैल गई थी कि हमारे शहर में एक अद्‌भुत हास्य कलाकार का जन्म हुआ है। सिनेमावाले उसे ढूँढ रहे हैं और आनेवाले समय में वह भी जॉनी वॉकर की तरह शहर का नाम रोशन करनेवाला है। लोग यह दृश्य देखने के लिए ही रीगल टॉकीज़ के आगे भीड़ लगा रहे थे।

बाद में पता चला कि देश के हर शहर का यही हाल है। लोग नानू के लिए बार-बार यह फिल्म देख रहे हैं।

सिनेमा के परदे पर आकर नानू ने मानो उन सबको मुँह चिढ़ा दिया था जो उसकी ज़मीन पर बने स्कूल में पढ़ने के लिए उसे घुसने नहीं दे रहे थे।

आगे चलकर यही नानू हिन्दी फिल्मों का मशहूर हास्य कलाकार बना। चक मक

कब्रिस्तान के पत्थर

प्रियम्वद

धरती के ऊपर जीवित लोगों की एक दुनिया है। धरती के नीचे मृत लोगों की एक दुनिया है।

रोज़ सुबह, जब चिड़ियों की चहचहाहट शुरू होती है, और अज़ान की आवाज़ें आकाश में घूमते परिन्दों की तरह फड़फड़ाने लगती हैं और पीला चाँद अपना बिस्तर समेटने लगता है, और आधा शहर आधी नींद में होता है, मैं घर के पासवाले कब्रिस्तान में घूमते हुए, कुछ देर के लिए धरती के नीचे की दुनिया में चला जाता हूँ।

वहाँ मैं सबको जानता हूँ। सब मुझे। कब्र के पत्थरों पर दौड़ते सूखे पत्तों की सरसराहट से वे मेरा अभिवादन करते हैं। कब्रों के बीच की सँकरी पगडण्डी पर घूमते हुए मैं उनके बारे में सोचता रहता हूँ। उनके जीवन के बारे में। उनकी मृत्यु के बारे में। पत्थरों के “एपिटैफ” पर लिखी उनकी ज़िन्दगी की नन्हीं कहानी के बारे में। उन्हें प्यार करनेवालों के बारे में। नंगे, सैकड़ों साल पुराने इन पत्थरों पर, रात भर टपकी ओस की बूँदें होती हैं। बरगद की झूलती जटाएँ होती हैं। कुछ उदास गौरय्या और सन्नाटे में धीरे-धीरे सरकता हुआ समय होता है।

कब्रों के बीच गुज़रते हुए मैं उनके अन्दर रहनेवालों से बात कर लेता हूँ। सारा...मेजर ब्राउन...कनिंघम...एलिज़ा विल्सन...। गंगा किनारे बने इस 250 साल पुराने कब्रिस्तान में सबसे पुरानी कब्र 1781 ईस्वीं के लेफ्टिनेंट कर्नल स्टेनफोर्थ की है। पत्थरों के नीचे सबसे कम उम्र की कब्र तीन घण्टे के बच्चे की है। 1 अक्टूबर 1834...। पत्थर पर उसका कोई नाम नहीं है। तीन घण्टे में माँ उसका नाम भी नहीं रख सकी। 1820 की एक कब्र में दो शरीर एक साथ दफन हैं। 1832 की एक कब्र, अवध के नवाब के आभूषणों की रखवाली करनेवाले शेख सलीम की है। धर्म बदलनेवाला वह पहला हिन्दुस्तानी था जो बाद में, पहला हिन्दुस्तानी पादरी अब्दुल मसीह बना। 1810 की एलिज़ाबेथ कलार्क की कब्र पर होरेस की पंक्तियाँ हैं।

WHAT RESTRAINT OR
LIMIT THERE BE TO GRIEF
(LONGING FOR) SO DEAR A LIFE

(एक अत्यन्त प्रिय जीवन की तड़प पर दुख का क्या प्रतिबन्ध/सीमा हो सकती है।)

18 महीने 9 दिन की सारा की कब्र पर लिखा है।

OH THE TEMPEST WAS UNKIND
AND STERN THE SHOWER
AND CRUEL WAS THE WAYWARD WIND
THAT WRECKED SO SWEET A FLOWER

(ओह, तूफान अकृपालु था
और बारिश निष्ठुर
और मनमौजी हवा निर्दयी थी
जिसने इतने प्यारे फूल को नष्ट कर दिया।)

एक उखड़े पत्थर पर मृत्यु का पूरा अस्वीकार है।

SHE IS NOT DEAD BUT SLEEPTH

(वह मरी नहीं सोई हुई है।)

सभी चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

बाइबिल के उदाहरण हैं। प्रार्थनाएँ हैं। ईश्वर की कृपा पर विश्वास है।

मृत लोगों की इस दुनिया में हर तरह का जीवन जीनेवाले लोग हैं। गंगा नदी पर कानपुर से कलकत्ता के जल मार्ग पर नावों का ठेकेदार है, अवैघ शराब बेचनेवाला है, मैसूर की तीसरी लड़ाई में टीपू सुल्तान के खिलाफ कार्नवालिस के साथ रहनेवाला और युद्ध के चित्र बनानेवाला चित्रकार रॉबर्ट होम है, 19 मई 1815 को चेचक से मरनेवाली श्रीमती फेरिस हैं, सेना को कपड़े सप्लाई करनेवाला ठेकेदार है, सेना में बैंड बजानेवाला है, दर्ज़ी है। नीलामी करनेवाली, बग्घी बनानेवाले हैं, सिविल सर्जन हैं। पत्थरों के नीचे इनका एक भरा पूरा संसार है, बिलकुल वैसा, जैसा हमारी धरती के ऊपर है। बस इतना फर्क है कि इस दुनिया में नफरत नहीं है, हिंसा नहीं है, ईर्ष्या नहीं है। यह भी कि ऊपर की दुनिया में सब कुछ बदलता है। जीवन बदलता है। प्रकृति बदलती है। भावनाएँ बदलती हैं। इस दुनिया में कुछ नहीं बदलता। कभी बदलेगा भी नहीं। सब कुछ एक झूलते अँधेरे में ठहर गया है। सदा के लिए।

....

मैं सर उठाकर देखता हूँ। पेड़ों के तनों के ऊपरी हिस्सों पर रोशनी आ गई है। सड़क के किनारे चूल्हों से धुँआ उठने लगा है। रात भर टूटे पत्ते जमा करके, सड़क साफ करनेवाला ढेर में आग लगा चुका है। आवारा कुत्ते सड़कों पर दौड़ने लगे हैं। नन्हे बच्चे कूड़ों के ढेर से सामान बटोरने के लिए बोरा लेकर आ गए हैं। भिखारी बैठने की जगह साफ कर रहे हैं। स्कूल जानेवाले बच्चे पीठ पर बस्ते लिए दिखने लगे हैं। रेडियो पर पुराना गाना बज रहा है। कारखाने का हूटर मज़दूरों को बुला रहा है।

इस दुनिया में लौटने का मेरा समय भी हो गया है। उन्हीं पगडण्डियों पर चलता हुआ, मैं कब्रिस्तान का बड़ा फाटक खोलता हूँ। कुछ क्षण इस दुनिया की चमक को देखता हूँ, फिर सर झुकाकर, चुपचाप लौट आता हूँ।

माथापच्ची

1 साहिल का जन्म 5 मार्च 1970 में हुआ। उसके जन्म से ठीक 25 दिन पहले जिया का जन्म हुआ। उस साल 26 जनवरी को सोमवार था। क्या दी गई जानकारी के आधार पर तुम बता सकते हो कि जिया का जन्म किस दिन हुआ था?

5 जेसिका, सारा, साहिल और जसप्रीत कमरे में खेल रहे रहे थे कि अचानक एक ज़ोर की आवाज़ हुई और गुलदस्ता चकनाचूर हो गया। इससे पहले कि माँ कुछ पूछतीं सारा और जेसिका लगभग एक साथ बोलीं:
जेसिका: मैंने नहीं तोड़ा।
सारा: जसप्रीत ने तोड़ा।
साहिल: नहीं, सारा ने तोड़ा।
मासूम-सा चेहरा बनाते हुए जसप्रीत ने कहा, "सारा झूठ बोल रही है।"
यदि चारों में से केवल एक सच कह रहा हो तो बताओ कि गुलदस्ता किसने तोड़ा?

2 एक खाली बस में पहले बस स्टॉप से 10 लोग चढ़े। 8 लोगों ने टिकट लिए और बाकी के दो ने कंडक्टर को अपने पास दिखाए। अगले बस स्टॉप पर 5 लोग बस से उतर गए और जितने लोग पहले बस स्टॉप से चढ़े थे उससे दुगुने लोग इस बस स्टॉप से चढ़े और सभी ने टिकट लिया। तीसरे बस स्टॉप पर 25 लोग उतर गए तो अब बस में कितने लोग बचे?

3 यदि एक दिन के लिए तुम्हें किसी एक जानवर में बदलने का मौका मिले तो तुम कौन-सा जानवर होना चाहोगे और क्यों?

4 गीली रेत का रंग सूखी रेत के रंग से गहरा क्यों होता है?

6 क्या तुम बोर्ड को दो टुकड़ों में काटकर गड्ढे को ढँक सकते हो? बस कुछ बातों का ध्यान रखना:
तुम बोर्ड को केवल दो टुकड़ों में ही काट सकते हो। गड्ढा पूरी तरह ढँका जाना चाहिए। दोनों बोर्ड एक-दूसरे के ऊपर नहीं आने चाहिए।
और कोई भी बोर्ड गड्ढे के किनारे से आगे नहीं होना चाहिए।

चित्र : दिलीप चिंचालकर

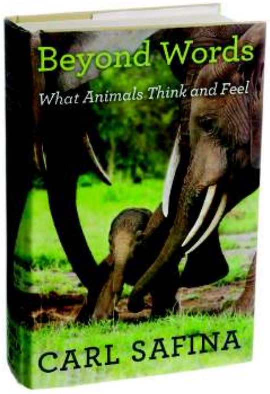

वो कोई एक मील दूर होंगे। पर टेलिस्कोप से साफ दिख रहे हैं। कोई आधा दर्जन, लम्बी कुत्तों-सी टाँगोंवाले भेड़िए। वो हमारे बीच की दूरी को तेज़ी से निगलते जा रहे थे। वैसे उन्हें कोई जल्दी नहीं थी। मैं उन्हें आता देखता रहा। ज़िन्दगी में पहली बार मैं इतने सारे भेड़ियों को एक-साथ देख रहा था... यह कहना है कार्ल सफीना का जो अपनी किताब *बिऑण्ड वड्‌र्स - वॉट एनिमल्स थिंक एण्ड फील* के लिए उन लोगों से मिले जो एक लम्बे अरसे तक किन्हीं जानवरों के साथ रह रहे थे। इस बार हम मिलेंगे रिक मैक इनटायर से...

कार्ल सफीना

प्रस्तुतिः शशि सबलोक

और भेड़िए क्या सोचते होंगे...

64-65 की उम्र। तिकोना चेहरा। गहरी पनीली आँखें। इस पृथ्वी पर किसी और इंसानी आँखों ने भेड़ियों को इतना नहीं देखा होगा जितना रिक की आँखें देख चुकी हैं। पिछले 15 सालों से हर रोज़, बिना नागा वे यहाँ आ रहे हैं। सर्दी-गर्मी-बरसात, बर्फबारी – कुछ भी हो। वे यहाँ के हर भेड़िए को जानते हैं। उनके पुरखों को भी।

रिक रेंजर हैं। और कई सारे नैशनल पार्क में काम कर चुके हैं। 15 साल पहले उन्हें पता चला कि तमार घाटी के यैलोस्टोन नैशनल पार्क में भेड़ियों को फिर से बसाए जाने की कोशिश हो रही है। सालों पहले यहाँ बहुत से भेड़िए थे। पर पिछले 70 सालों से यहाँ से उनका नामोनिशान तक मिट चुका है। रिक ने यह मौका हाथ से जाने न दिया और यहाँ आ गए।

चित्रः हबीब अली

रिक के साथ मैं घूमने निकला। उन्होंने धूप में चमकती बर्फ पर अब तक लेटी दो मादा भेड़ियों को देखा और बोले, “वो जिसकी पूँछ खड़ी थी वो 8-20 है। हाथियों के नाम होते हैं, भेड़ियों के नम्बर। उनकी कॉलर (गले में बँधे पट्टे) पर लिखा नम्बर ही उनका नाम हो जाता है। पर आप कोई नाम लें या उसे 25 कहें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। मेरे मन में वो नम्बर एक भेड़िए की पहचान की तरह की उतरता है। जिसका किसी के साथ कोई रिश्ता है और जिसका अपना एक वजूद है।”

वे बताते हैं कि 8-20 अपनी माँ जैसी है। दो साल की है। पर आत्मविश्वास से भरी हुई। और आज़ाद ख्याल। माँ जैसी बढ़िया शिकारी। उसकी छोटी बहन का नाम बटरफ्लाई है। असल में उसका कोई कॉलर नहीं है इसलिए उसे कोई भी नाम दिया जा सकता है। वो सबकी दोस्त है। कोई गुस्से में हो तो वो झट अपना शरीर और कानों को झुका लेगी। पूँछ को टाँगों के बीच दबा लेगी। वैसे ही जैसे हम किसी के आगे हथियार डाल देने की मुद्रा में होते हैं। इसकी माँ थी Oh-6। चार महीने पहले उसे किसी ने मार दिया। और पूरा परिवार बिखर गया। फिर अचानक एक दिन 8-20 पर उसकी बहनों ने ज़ोरदार हमला कर दिया। वो सब मिलकर उसे काटने लगीं। उसके पेट पर, पुट्ठों पर, उसकी गर्दन को नोचने लगीं। वो बेतरह ज़ख्मी हो गई। इसी तरह भेड़िए भेड़ियों को मारते हैं।

अचानक उसे मौका लगा और वो भाग खड़ी हुई। पर कुछ दूर जाकर लौट आई। वो परिवार का हिस्सा बने रहना चाहती थी। पर बहनें नहीं चाहती थीं। और यह बात उन्होंने धमकाकर, गुर्राकर ज़ाहिर कर दी। 8-20 फिर दूर जाते-जाते ओझल हो गई।

रिक कहते हैं कि 8-20 की माँ Oh-6 कमाल की भेड़िया थी। और उससे भी कमाल के भेड़िया थे उसके दादा 21 – एक मुकम्मल भेड़िया। एक किताबी किरदार जो जैसे जीवन पा गया हो।

दूर से ही वो पहचान में आ जाता था। चौड़े कन्धे, हष्टपुष्ट शरीर। एक बार मैंने उसे छह भेड़ियों से लड़ते हुए अपने परिवार को बचाते देखा था। लग रहा था मानो ब्रूसली को

एक मुकम्मल भेड़िया

असल ज़िन्दगी में देख रहा हूँ। न वो कभी हारा, न हारनेवाले को कभी उसने जान से मारा।

21 के माँ-बाप को कनाडा से यहाँ लाया गया था। इल्क (एक तरह के बारहसिंघे) की इस ज़मीन पर भेड़ियों को बसाने के लिए। 70 साल से भेड़िए न होने के कारण यहाँ इल्क इतने ज़्यादा हो गए थे कि सर्दियों में उनके लिए खाना तक नहीं बचता था। भेड़ियों को इस असन्तुलन को ठीक करना था। उनके लिए तो यहाँ खाना ही खाना था। पर 21 पैदा हो पाता इससे पहले ही उसके पिता को किसी ने गोली मार दी। मादा भेड़ियों के लिए बच्चे को अकेले सम्भालना मुश्किल होता है। इसीलिए शोधकर्त्ताओं ने उन्हें दूसरे भेड़ियों के साथ रख दिया।

ढाई साल का होते-होते 21 ने अपनी माँ, अपने नए पिता और पूरे कुनबे को छोड़ दिया। और Drvid peak नामके परिवार का हिस्सा बना। अब देखिए यह संयोग ही है कि दो दिन पहले ही इस परिवार का मुखिया गोली लगने से मारा गया था। ऐसे में सभी ने दिल खोलकर 21 का स्वागत किया। 21 ने भी परिवार को सम्भालने की पूरी ज़िम्मेदारी निभाई। बच्चों का ख्याल रखा। वो शिकार करता और खुद दूर जा बैठता। ताकि परिवार के लोग

अच्छी तरह खा-पी सकें। वो वहाँ पेशाब करता और कभी-कभी सो भी जाता।

21 को बच्चों से कुश्ती लड़ना बहुत अच्छा लगता था। वो बच्चों को अपने ऊपर कूद-कूदकर फर चबाने देता। कभी वो यूँ दिखाता कि हार गया हो। पीठ के बल गिरता और पाँव हवा में उठा लेता। बच्चे विजयी भाव से उसके ऊपर खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से पूँछ हिलाने लगते।

आप अगर कोई नाटक कर रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि आपको पता है कि आपके ऐसा करने का दूसरे कोई अर्थ लगाएँगे। वो इसे समझेंगे। यह समझदारी का इशारा है। बुद्धिमत्ता का। मुझे यकीन है कि बच्चे भी जानते होंगे कि असली बात क्या है। पर उनके लिए यह एक सबक है कि अपने से बड़ों को हराने का एहसास क्या होता है। और भेड़ियों के लिए यह सीखना बहुत ज़रूरी भी है।

थोड़े ही समय में 21 का कुनबा बहुत बड़ा हो गया। तीन दर्ज़न से ज़्यादा भेड़िए एक टोली में होना एक असम्भव-सी बात थी। यह इस बात का संकेत था कि वहाँ खाने की कमी नहीं थी। पर इसका खामियाज़ा भी भुगतना पड़ा। भेड़ियों में लड़ाइयाँ होने लगीं। लड़ाई में भेड़िए अकसर मुखिया को निशाना बनाते हैं जिससे जीतना आसान हो जाता है।

मैं अकसर सोचता हूँ कि हराने के बाद 21 अपने दुश्मन को छोड़ क्यों देता था। इस पर यकीन करना मुश्किल लगता है इसकी वजह दया या उदारता थी! तो क्या भेड़िए उदार होते हैं? अगर हाँ तो क्यों?

दरअसल इंसान और जानवरों दोनों के लिए कोई ओहदा या हैसियत पाना एक बड़ी बात होती है। इसके लिए काफी समय, ऊर्जा, दिमागी चर्बी खर्च की जाती है। अच्छी हैसियत हो तो अच्छा जीवन जीने के मौके तमाम मिलते हैं। अच्छा साथी और भोजन पाने के भी मौके ज़्यादा मिलते हैं। अपनी टोली या कुनबे को बढ़ाने के मौके भी तमाम मिलते हैं। पर सवाल तो वही रहा कि क्या भेड़िए उदार होते हैं?

रिक इसका जवाब सीधे-सीधे नहीं देते – वे कहते हैं कि जब हम एक ऐसे हीरो की तारीफ करते हैं जो अपनी ताकत को अपने काबू में रखता है तब दरअसल हम उसकी हिम्मत से प्रभावित हो रहे होते हैं। एक ऐसी कहानी जिसमें एक अच्छा इंसान किसी बुरे व्यक्ति को मार डालता है उतनी दिलचस्प नहीं होती जितनी वो जहाँ एक अच्छा इंसान किसी ऐसी कशमकश से गुज़रता है जहाँ उसे सूझ नहीं पड़ रहा होता है कि उसके लिए क्या सही है, क्या गलत! उसे क्या करना चाहिए, क्या नहीं! यहाँ रिक कुछ ठहरकर एक कहानी सुनाते हैं –

एक बार 21 की ज़िन्दगी में एक नर भेड़िया आया जो बहुत ही खूबसूरत और गबरू था। सारे भेड़िए उसे बहुत पसन्द करते थे और उसके साथ रहना चाहते थे। खास तौर पर मादा भेड़िए। पर गबरू अपनी कोई भी ज़िम्मेदारी ठीक तरीके से निभाता नहीं था। और रिश्तों में ईमानदार भी नहीं था। पर दूसरे नर और मादा भेड़ियों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। एक दिन 21 ने उस गबरू को अपनी बेटियों के साथ देख लिया। वो उसके पीछे भागा और उसे काटने लगा। कुनबे के दूसरे भेड़िए भी इस मार-पीट में शामिल हो गए। सबने मिलकर उसे गिरा दिया। वो गबरू ज़रूर था पर लड़ने में माहिर नहीं था।

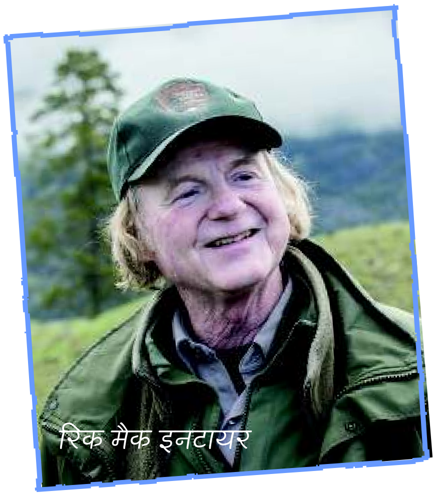
रिक मैक इनटायर

जब सब उसे मारने में लगे थे अचानक 21 रुक गया और पीछे हट गया। सब रुक गए। 21 को देखने लगे मानो पूछ रहे हों, “क्या हुआ? रुक क्यों गए?”

इतने में गबरू उठा और भाग गया।

मैं सोचता रहा 21 ने उसे मारा क्यों नहीं? पर फिर सालों बाद 21 के मरने के बाद जो हुआ उसमें इसका कारण ढूँढा जा सकता है। हुआ यूँ कि 21 के मरने के बाद थोड़े समय के लिए वो गबरू 21 के कुनबे Drvid peak का सरदार बन गया। पर बात बनी नहीं। वो जानता नहीं था कि उसे करना क्या है। वो लीडर नहीं था। अलबत्ता उसके छोटे भाई में लीडर बनने के तमाम हुनर थे। गबरू को भी इससे कोई दिक्कत न थी। उसके लिए तो मौजमस्ती के रास्ते खुले ही थे।

कुछ सालों बाद गबरू Drvid peak के कुछ नरों के साथ कुछ मादाओं से मिला और एक नया कुनबा बनाया – pack blacktail। वो इस कुनबे का ज़िम्मेदार लीडर और बाप बना। सालों बाद गबरू दुश्मनों से अपने कुनबे को बचाते हुए मारा गया। उसके कुनबे के सभी भेड़िए सुरक्षित रहे। और ये भेड़िए और कोई नहीं 21 के पोते-पोतियाँ...परपोते-परपोतियाँ ही थे। यह सही है कि भेड़िए आगे क्या होगा इसका पूर्वानुमान नहीं लगा पाते हैं। पर क्या हम यहाँ यह नहीं सोच सकते कि उस दिन गबरू को छोड़कर उसने अपनी ही आनेवाली पीढ़ियों के जीने की सम्भावना को बचाए रखा, बनाए रखा। और विकास की राह में तो सिकन्दर वही होता है जिसका वंश फलता-फूलता रहे।

यह सब बताते हुए रिक अचानक बहुत पीछे चले जाते हैं। वो कहते हैं कि यह उस वक्त की बात है जब 21 जवान था और अपने माँ-पिता के साथ रहता था। उनकी टोली में कई छोटे बच्चे थे। उनमें से एक बच्चा कुछ बीमार रहता था। बाकी के बच्चे उससे डरते थे और उसके साथ खेलते नहीं थे। एक दिन 21 कुछ खाने के लिए लाया। बच्चों के सामने खाने को रखकर वो कुछ दूर खड़ा हो गया। और बेचैनी से इधर-उधर देखने लगा। अचानक उसकी पूँछ तेज़ी से हिलने लगी। उसने उस बीमार बच्चे को देख लिया था। वो उसके पास गया और खेलने लगा। इतना कहकर रिक चुप हो गए। मानो अपने भीतर घुमड़ रही किसी बात को शब्द देने की कोशिश में हों। पर वो सिर्फ इतना बोले, “21 की कई कहानियाँ मेरे पास हैं पर यह एक बात मुझे भुलाए नहीं भूलती। असल में ताकत हमको अपनी तरफ खींचती ज़रूर है पर याद हमें करुणा-उदारता ही रहती है।”

अधिकाँश भेड़िए बहुत बुरी मौत मारे जाते हैं। 21 का पूरा जीवन लड़ाई-झगड़ों में बीता। पर बावजूद इसके वो अपनी उम्र पूरी करके ही खत्म हुआ।

वो जून का एक दिन था। 21 नौ साल का हो गया था। पूरा परिवार आराम कर रहा था। अचानक एक इल्क वहाँ से गुज़रा। सब उसका पीछा करने कूद पड़े। वो भी कूदा पर फिर वहीं खड़ा रहा। वहीं लेट गया। जब पूरा परिवार चला गया तो उसने घाटी पार की और उलटी दिशा में चलने लगा। अकेला। कुछ देर बाद उस तरफ से आए एक व्यक्ति ने बताया कि ऊपर पहाड़ी पर उसने एक मरे हुए भेड़िए को देखा है। रिक कहते हैं कि वो तुरन्त घोड़े पर बैठे और वहाँ चल दिए।

शायद 21 को पता चल गया था कि उसका अन्तिम समय आ गया था। तभी तो उसने अपनी बची-खुची ताकत इकट्ठा कर उस पहाड़ पर चढ़ने में लगा दी। यहाँ सालों पहले वो अपने परिवार के साथ रहता था। पहाड़ पर ऊँची घास थी। जंगली फूल थे। 21 एक बड़े पेड़ की छाँव में गोल होकर बैठ गया। और आखरी नींद सो गया...

किस्त -1

पुड़ियों की गठरी

क्लास में घुसते ही पुष्पा ने राधा का हाथ पूरे ज़ोर-से पकड़कर खींचा। राधा चीखी, “पुष्पा! मेरी चूड़ी टूट जाएगी! छोड़ो मेरा हाथ!”

लेकिन पुष्पा ने राधा का हाथ नहीं छोड़ा और अपने दूसरे हाथ से राधा की हथेली खोलने लगी।

“क्या कर रही है पुष्पा? छोड़ मेरा हाथ!” राधा फिर चीखी। क्लास में घुसती हुई लड़कियाँ इन्हें घूर रही थीं।

“चीखती क्यों हो? मैं तुम्हें मार तो नहीं रही?” पुष्पा खिलखिलाकर बोली।

“फिर क्या कर रही हो?”

“शर्त लगा रही हूँ।”

“शर्त? किस बात की शर्त?” राधा चौंककर बोली।

“इस बात की कि यह बस चल सकती है या नहीं।” पुष्पा बोली।

“चलने में कौन-सी बड़ी बात है। पुरानी है तो क्या हुआ? है तो बस! क्यों नहीं चलेगी?” राधा इतनी शान्ति से बोली मानो वह पूरी तरह भूल गई हो कि कुछ देर पहले वह पुष्पा पर चीखी थी।

पुष्पा ने एक क्षण के लिए अपनी सहेली की आँखों में झाँकने की कोशिश की। शर्त लगाने में पुष्पा को हमेशा बहुत मज़ा आता है, पर इस बार शर्त लगाने से पहले वह अच्छी तरह सोच लेना चाहती थी कि उसे किस तरफ से शर्त लगानी है। राधा की बात में दम था कि बस तो आखिर बस ही है, ठीक हो जाएगी तो चलेगी भी। लेकिन वह हमेशा राधा की बात काटती आई है तो इस बात को कैसे मान ले? उसे बस की बहुत याद आई—सालों से खड़े हुए ज़मीन में धँसते टायर, जंग खाए पहिए, खिड़कियों के टूटे काँच और सबसे बड़ी बात—इंजन से झाँकते हुए सैंकड़ों पुराने तार। ऐसी बस भला कैसे चल सकती है? और चल भी जाए तो सड़क पर चलनेवाली दूसरी बसों से कैसे बचेगी? बसों से बच भी गई तो ट्रकों से....?

पुष्पा ने अपना मन बना लिया। उसने राधा की खुली हुई हथेली पर पूरी ताकत से अपनी हथेली मारी—पटाक।

“लग गई शर्त! मैं कहती हूँ यह बस निवाड़ी तक नहीं पहुँच सकती। बोल, कितने की शर्त है?”

“तुझे पता भी है निवाड़ी कहाँ है?” राधा ने पूछा।

“चल, कुसुम मैडम से पूछते हैं।” पुष्पा राधा को खींचने लगी। क्लास की सारी लड़कियाँ अब तक अन्दर आ चुकी थीं।

“अभी सर आ जाएँगे। तू निवाड़ी के चक्कर में आज सर की डाँट खाएगी।” राधा बोली ।

सर यानी प्रमोद सर, जो पूरे स्कूल में “हारमोनियम मास्साब” के नाम से जाने जाते थे। सातवीं “सी” के क्लास टीचर थे। जलनेवाले कहते थे कि इसीलिए इस सेक्शन की दो-दो लड़कियाँ पुष्पा और राधा प्रार्थना गाती थीं। तीसरी थी आठवीं की आशा। तीनों को प्रमोद सर के हारमोनियम के ठीक बगल में अशोक के पेड़ों से घिरे मंच पर स्कूल की सारी लड़कियों के सामने खड़ा होना पड़ता था। इसलिए तीनों के सफेद दुपट्टे हमेशा चमकदार रहते थे।

“वर दे वीणा वादिनी” के बाद किसी-किसी दिन बड़ी बहनजी यानी स्कूल की नई प्रिंसिपल मंच से दो-चार मिनट बोलती थीं। उनकी ओर देखकर प्रमोद सर समझ लेते थे कि आज बड़ी बहनजी को कुछ कहना है। वे इशारे से पुष्पा, राधा और आशा को समझा देते कि तीनों को चुपचाप खड़े रहना है। बड़ी बहनजी धीरे-धीरे मंच की तरफ बढ़तीं। उनके इन्तज़ार में सन्नाटा छाया रहता। ऐसे में अशोक पर गिलहरी की “किट किट” अलग से सुनाई पड़ने लगती।

उस सुबह बड़ी बहनजी ने बताया था कि सम्भागीय खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए

पुड़ियों की गली

कृष्ण कुमार

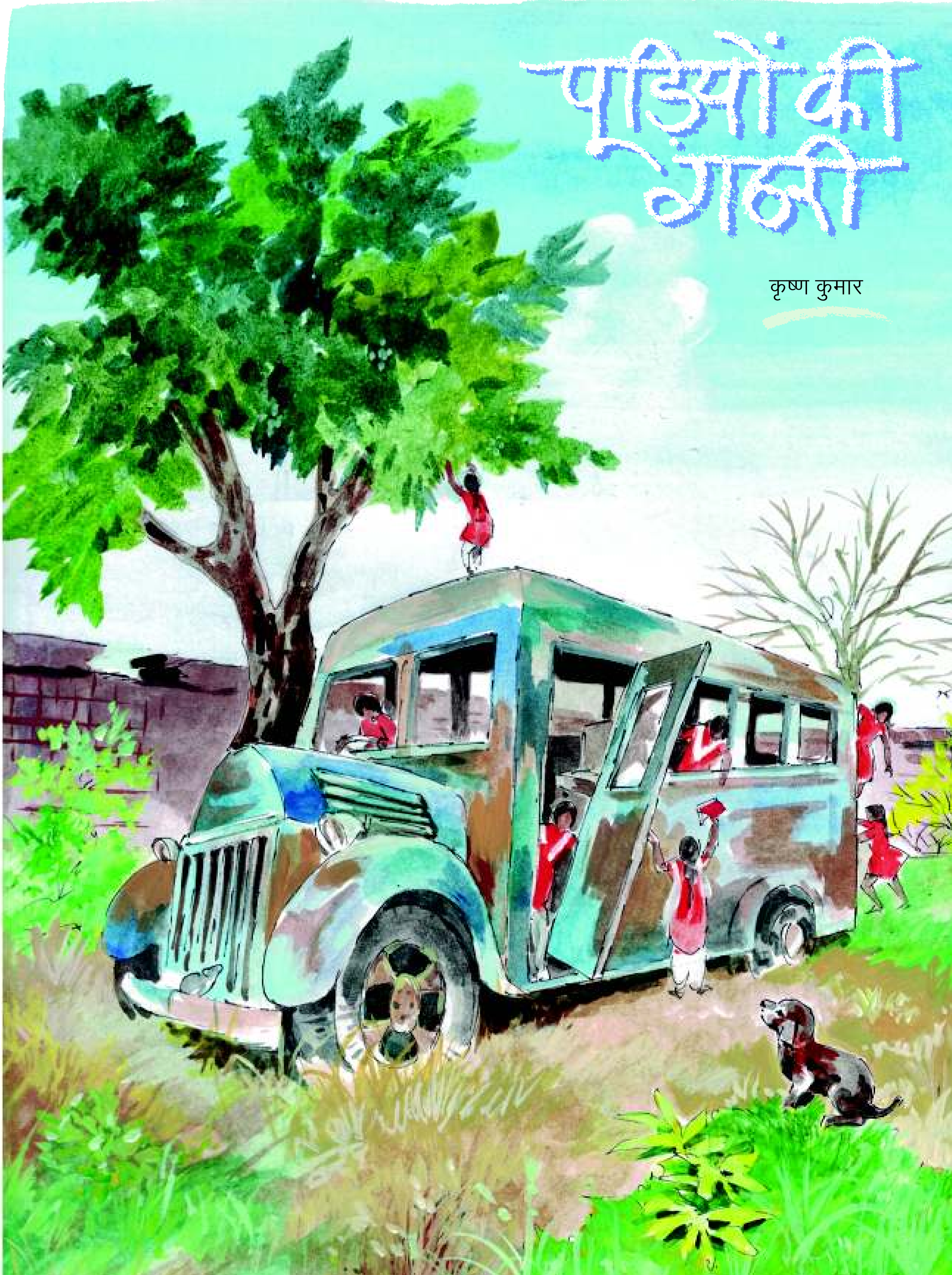

चित्रः जगदीश जोशी

स्कूल की टीमें निवाड़ी भेजी जाएँगीं। सब यह जानने को उत्सुक हो उठे थे कि कौन-कौन-से खेल की टीमें जाएँगीं। पर यह बात बड़ी बहनजी ने नहीं बताई। वे तो एक ओर ही धमाका करने के लिए मंच पर पहुँची थीं। धमाका इस बात से हुआ कि लड़कियाँ स्कूल की पुरानी बस में जाएँगीं। यह धमाका होते ही सारा स्कूल हँस पड़ा। पुरानीवाली प्रिंसिपल के सामने तो कोई हँसने की सोच भी नहीं सकता था। पर नई प्रिसिंपल ने कुछ ही महीनों में स्कूल का माहौल बदल डाला था। उन्हें लोग मैडम की जगह "बड़ी बहनजी" कहने लगे थे। जब वे कोई बात कहतीं तो हर किसी को लगता कि उसी के घर का कोई बड़ा अपनी बात समझा रहा है।

बस की बात सुनकर सबने सोचा कि बड़ी बहनजी मज़ाक कर रही हैं। यह समझकर वे बोलीं, "मैं मज़ाक नहीं कर रही हूँ। मैं बस की मरम्मत करवा रही हूँ। हमारी लड़कियाँ उसी में बैठकर निवाड़ी जाएँगीं।"

प्रार्थना से लौटते हुए सभी के मन में यह सवाल था कि इतनी पुरानी और खटारा बस भला कैसे इस लायक बन सकती है कि उसमें बैठकर इतनी दूर जाया जा सके। बस को आज तक किसी ने चलते हुए नहीं देखा था। स्कूल की सबसे पुरानी चपरासिन तिजिया बताती थी कि यह बस आखिरी बार कोई बीस साल पहले चली थी। तभी से वह स्कूल के फाटक के पास खड़ी थी। छुट्टी के दिन आसपास के बच्चे बस की टूटी खिड़कियों से घुसकर अन्दर खेलते थे। कोई ड्राइवर की सीट पर बैठकर स्टीयरिंग घुमाता है, तो कोई खिड़की पर पैर रखकर छत पर चढ़ जाता है।

इस बस पर चढ़कर कोई कहीं जाने की सोच रहा है, यह बात किसी और ने कही होती तो पागलपन मानी जाती। लेकिन यह बात बड़ी बहनजी ने कही थी, इसलिए सब लोग एक बार हँसकर चुप हो गए थे। पुष्पा और राधा ने तय किया था कि वे इस बारे में कुसुम मैडम से पूछेंगी। कुसुम मैडम खेल की टीचर थीं। सात ज़िलों की खेल प्रतियोगिताएँ इस बार निवाड़ी में होंगी, यह बात कई दिन पहले कुसुम मैडम ने ही लड़कियों को बताई थी। राधा और पुष्पा को पूरी उम्मीद थी कि खो-खो की टीम के लिए वे दोनों चुनी जाएँगीं। उनकी टक्कर की दो और लड़कियाँ सातवीं कक्षा के "बी" सेक्शन में थीं। उनके मुकाबले में राधा और पुष्पा का पलड़ा कुछ भारी था तो इसलिए कि इन दोनों का गला अच्छा था। खेल हो या और कोई बात स्कूल की किसी भी ट्रिप से उन्हें बाहर रखना मुश्किल होता था क्योंकि अच्छी आवाज़ की ज़रूरत हर कार्यक्रम में पड़ती थी।

आधी छुट्टी में कुसुम मैडम प्रेम चाटवाले के ठेले पर मिलीं। प्रेम का ठेला स्कूल के फाटक के बाहर पुरानी बस के बगल में खड़ा रहता था। लोहे का ऊँचा फाटक स्कूल के मेहराबदार प्रवेश को हमेशा कसकर बन्द रखता था। फाटक में एक लम्बी-सी खिड़की थी। सुबह के समय इसी खिड़की के रास्ते लड़कियाँ भीतर आती थीं। खिड़की में घुसने के लिए बड़ी बहनजी को भी पैर सम्भालकर कदम अन्दर रखना होता था क्योंकि खिड़की सड़क से आधे फुट की ऊँचाई से शुरू होती थी। आँगन में प्रार्थना शुरू होने के ठीक पहले तिजिया खिड़की के पास आती और उन्हें ज़ोर-से धक्का देकर बन्द कर देती। खिड़की के बन्द होने की आवाज़ का अर्थ होता है कि अब प्रार्थना शुरू होनेवाली है। इसके बाद खिड़की को आधी छुट्टी की घण्टी बजाकर ही खोलती। तब तक प्रेम चाटवाला अपना ठेला बाहर लगा चुका होता। आधी छुट्टी में लड़कियाँ उसे घेर लेतीं और कुसुम मैडम भी उसी घेरे में धँसी होतीं। शरीर से खूब मज़बूत होने के बावजूद वे इतने नाटे कद की थीं कि लड़कियों के झुण्ड में उन्हें दूर से देख लेना बहुत मुश्किल होता था। वैसे भी वे लड़कियों में घुल-मिलकर रहती थीं और शायद इसलिए प्रेम चाटवाले के पास खुद जाकर चाट खाना उन्हें पसन्द था। दूसरी बहनजियों की तरह मँगाकर नहीं। उन्हें सब लोग बहनजी की जगह मैडम शायद दो कारणों से कहते थे। एक वजह थी उनके कटे हुए बाल और दूसरी उनका गहरा नीला कोट जो शहर भर में मशहूर था। कोट की जेब पर सुन्दर, चमकीले अक्षरों में उस कॉलेज का नाम कढ़ा हुआ था जहाँ उन्होंने खेल का प्रशिक्षण पाया था। स्कूल की हर लड़की सैकड़ों बार यह नाम उनके कोट पर पढ़ चुकी थी। "लक्ष्मी बाई कॉलेज ऑफ फिज़ीकल एजुकेशन एण्ड स्पोर्ट्स"।

कुसुम मैडम की दूसरी खास पहचान उनके कटे हुए बाल थे जो हमेशा एकदम साफ रहते थे, और चमक के साथ उनके कन्धे पर इतने सीधे गिरते थे जैसे कोई चुम्बक उन्हें नीचे की तरफ खींच रहा हो।

"मैडम, एक बात पूछनी है।" पुष्पा ने चाटवाले के इर्दगिर्द जमा भीड़ में घुसते हुए पूछा।

कुसुम मैडम मसालेदार पानी से लबालब भरा गोलगप्पा मुँह में डालते-डालते रुकीं और पुष्पा को पहचानकर बोलीं, "क्या बात है?"

"मैडम, निवाड़ी कितनी दूर है?"

"निवाड़ी यही कोई दो सौ मील। क्यों, बात क्या है?"

"मील या किलोमीटर?"

"मील" कहते-कहते उन्होंने हाथ में सधा गोलगप्पा मुँह में डाल दिया। जब वह पूरी तरह नीचे चला गया तो उन्होंने फिर पूछा, "बात क्या है?"

"हम लोगों में शर्त लगी है कि हमारे स्कूल की खटारा बस इतनी दूर नहीं जा सकती।"

पुष्पा की हिम्मत नहीं हुई कि कहे मैं कह रही हूँ। इस बात को मोड़ते हुए बोली, "कुछ नहीं, कुछ नहीं मैडम.... राधा कह रही थी कि आराम से चली जाएगी। उसे इस बात की खुशी हो रही थी कि उसने इतनी आसानी से खुद को बचा लिया।

"राधा ठीक कहती है। मुश्किल क्या है? बस क्यों नहीं जा सकती। कुसुम मैडम को जोश आने लगा था। उन्हें लड़कियों के किसी भी विवाद में पड़ना बहुत भाता था। उनके हाथ में अभी तीन ओर गोलगप्पे न होते तो वे सारी बात खोद-खोदकर पता लगा लेतीं कि शर्त कितने रुपए है, किसने लगाई है। पुष्पा समझ गई थी कि अब यहाँ से चुपचाप खिसक लेना ही ठीक है।

क्लास में पहुँचते ही वह राधा से फिर उलझ गई। राधा के कन्धे पर हाथ मरते हुए बोली, "कुसुम मैडम कह रही हैं कि निवाड़ी दो सौ मील दूर है। तुझे पता है दो सौ मील में कितने किलोमीटर होते हैं। इतनी दूर हमारी सड़ी हुई गाड़ी नहीं जा सकती।"

अगले अंक में जारी

(यह कहानी नेशनल बुक ट्रस्ट - राष्ट्रीय पुस्तक न्यास - से साभार प्रकाशित की जा रही है।)

मरीचिका

उदयन वाजपेयी

तेज़ गर्मी में हिरण काले पड़ जाते हैं। पक्षी उड़ना छोड़कर पत्तों के पीछे छिपकर सो जाते हैं। पर धरती कहाँ जाए? वह खुली धूप दिनभर झुलसती रहती है। जब उसका चेहरा कुछ अधिक ही झुलस गया होता है धरती को इच्छा होती है कि कहीं वह अपना चेहरा देखे।

पर यह कैसे हो? झुलसी धरती अपना चेहरा कहाँ देखे? अचानक वह पाती है कि उसके ऊपर की हवा तेज़ गर्मी के कारण पानी सी लहरा रही है। ठीक उसके ऊपर पानी की तरह। धरती को मालूम है कि पानी में झाँककर अपना चेहरा देखा जा सकता है। मरीचिका हवा का थोड़ी सी देर के लिए झुलसती हुई धरती पर पानी बन लहराना है। मानो धरती के ऊपर लहरदार आइना तैयार हो गया है। उसी में धरती अपना झुलसा चेहरा देखकर खुश हो लेती है कि वह झुलसा ज़रूर है बदसूरत नहीं हुआ।

हवा का इस तरह पानी बन लहराना रेगिस्तान में अकसर ही होता है। हवा मानो तैयार ही बैठी रहती है कि वह पानी सी लहराए। फिर भले ही उसके लहराने को पानी से भरा सरोवर मानकर प्यासा हिरण दौड़ता-दौड़ता थक जाए।

चित्रः चन्द्रमोहन कुलकर्णी

मखमल में लिपटे जूते

जूते तो बहुत मिले – सस्ते, खस्ता और जेब की कुव्वत से लकदक महँगे भी। सबसे ज़्यादा जिन्होंने काटा वे थे बचपन में मखमल में लिपटे मिले जूते। मैं कोई मुहावरा नहीं लिख रहा। मखमल पिता का स्नेह था। उनकी तनख्वाह कोई ज़्यादा नहीं थी फिर भी हर वर्ष दशहरे से पहले वे मुझे बाटा की दुकान ले जाते और चमड़े के सुन्दर काले जूते दिलवा देते। उनकी खुशबू इतनी प्यारी होती कि लगता सिरहाने ही रखकर सो जाऊँ। कीमत होती थी चौदह रुपए। साथ में मेरी पसन्द की नायलोन की जुराबें, एक पॉलिश की डिबिया और एक ब्रुश। पूरे बीस रुपए। थोड़े सिक्के वापिस भी मिल जाते।

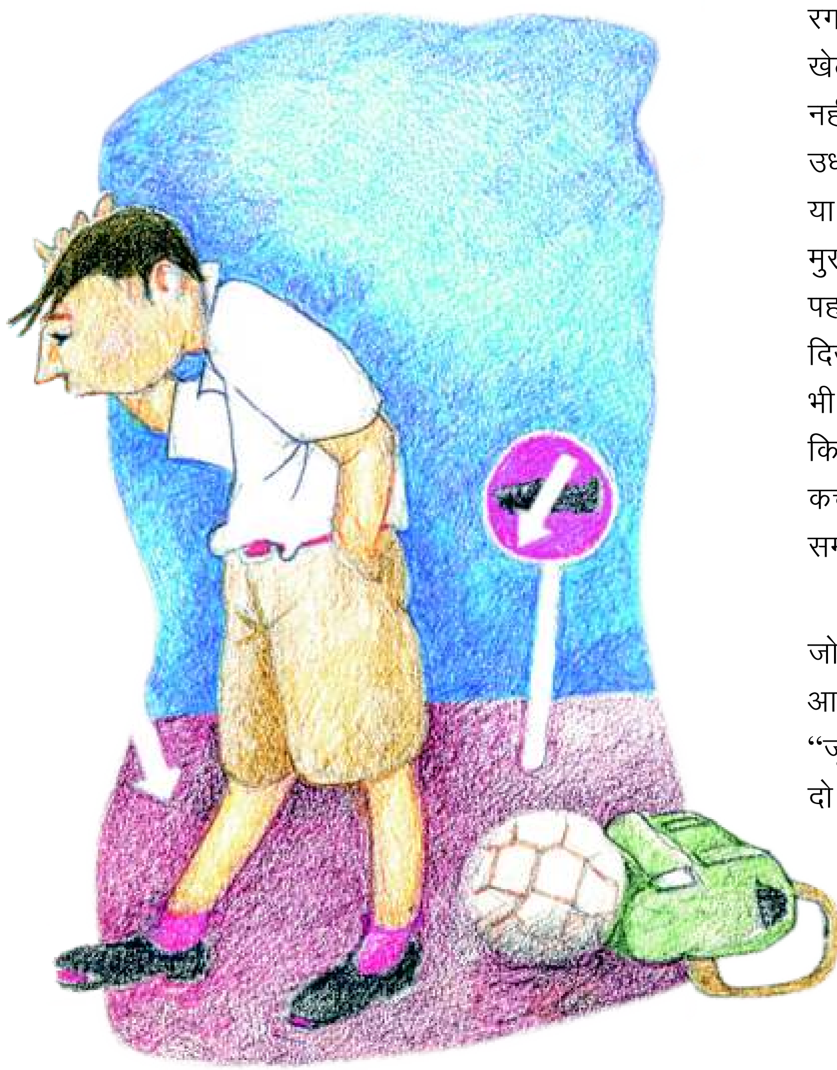

नए जूते पाकर मैं खूब इतराता क्योंकि उन दिनों स्कूल में न गणवेश (स्कूल ड्रेस) था न ही जूते पहनने का खास चलन। पॉलिश मुश्किल से दो-एक बार ही जूतों को छू पाती। फिर ब्रुश खो जाता और डिबिया सूख जाती। जूतों को मैं खूब रगड़ता – मीलों-मील चलता, धूल में फुटबॉल खेलता। मगर जूतों की हालत पर ज़रा भी ध्यान नहीं देता। चार-छह महीनों में जूते सामने से उधड़ जाते, कट जाते और भीतर से सुर्ख लाल या हलकी पीली जुराबें झाँकने लगतीं। लोग मुस्कराकर बताते कि तुमने फलाँ रंग की जुराबें पहन रखी हैं। जबकि वे जूतों के ऊपर यूँ ही दिखाई दे रही होतीं। मैं बड़ा शर्मिंदा होता। मोची भी जूते सीने से मना कर देता। यह हर साल का किस्सा होता। अब पचास साल बाद भी मन कचोटता है कि मैं पिता के स्नेह का मोल न समझा। पिताजी ने कभी डाँटा भी तो नहीं!

मोल समझने के लिए गाल पर करारी चपत जो खानी थी। तीस वर्ष बाद एक मित्र के नर्म, आरामदेह जूते देखे। मन को खूब भाए। पूछा, “जूता कितने का?” उत्तर मिला, “1200 का।” दो महीनों तक मन बनाया और रुपए जोड़े। आखिर खरीदने के लिए दुकान पर पहुँचा तो पता चला जूते 2400 के हैं। एक जूता 1200 का। ऐसे में उन्हें खरीदने का मतलब था दूसरा गाल भी आगे कर देना।

दिलीप चिंचालकर

रास्ते के संगी

मैं शायद स्कूल की चौथी जमात में था या पाँचवीं! घर से स्कूल की दूरी कोई तीन मील थी। एक मील यानी डेढ़ किलोमीटर से जरी भर ज़्यादा। मेरे लिए यह कोई मायने नहीं रखती थी। पता नहीं घर से कितने पहले निकलता! रमते-गमते चलता और हमेशा समय से पहले स्कूल पहुँच जाता।

रास्ता मुझे कभी उबाऊ नहीं लगा क्योंकि पत्थर का एक टुकड़ा रोज़ मेरे साथ स्कूल आता-जाता। घर से निकलते समय मैं सड़क किनारे से कोई पत्थर चुन लेता। न ज़्यादा बड़ा, न ज़्यादा छोटा। चपटा बेहतर रहता। गोल पत्थर उछलकर दूसरे राहगीर को लगने का डर बना रहता। फिर मैं उस पत्थर को पैर से नपी-तुली ठोकर मारते हुए स्कूल के सदर दरवाज़े तक ले आता और झाड़ी में कहीं अच्छे से बैठा देता। शाम को स्कूल छूटने के बाद मैं बड़ी अधीरता के साथ उसके पास पहुँच जाता जैसे कोई दोस्त दिन भर से बाहर बैठा मेरा इन्तज़ार कर रहा हो। फिर हम दोनों उसी तरह खेलते-खेलते घर पहुँच जाते। इस बार मैं उसे बगीचे में ठेल देता कि अपने साथियों के साथ रहो। कल फिर स्कूल साथ चलेंगे।

स्कूल के लम्बे रास्ते में कुछ पत्थर एकाध दिन ही चल पाते। कुछ खो जाते। उछलकर किसी को लग जाने पर उनसे पल्ला झाड़कर आगे चल देना पड़ता। रास्ते में हाथीपाले की बिना पुलिया की रपट थी। कुछ नीचे गन्दे पानी में गिर जाते। कुछ होते जो दो-तीन दिन से ज़्यादा चलते। और ऐसे जो पक्के साथी बन जाते उन्हें मैं घर के बगीचे में नीम के नीचे रख देता। तीन वर्षों में पक्के साथी भी खूब बन गए थे। जब हमने वह घर छोड़ा तो मैं उन सब साथियों को बटोरकर नए घर ले आया। मगर अक्का (मेरी तारा दीदी) ने न जाने कब उनको यह कह कर फेंक दिया कि यह लड़का पागल है, पता नहीं रास्ते के कंकर-पत्थर उठा लाने में इसे क्या मज़ा आता है।

दिलीप चिंचालकर

दोनों चित्रः दिलीप चिंचालकर

एक था हाजी एक था नाजी

स्वयं प्रकाश

चित्र: मयूख घोष

किस्सा थोड़ा पुराना है, लेकिन सुनानेवाले ने कहा था कि किस्सा सौ फीसदी सच्चा है।

हुआ ये कि हाजी अमरीका गए। खूब घूमे-फिरे। देखने लायक सारी चीज़ें देखीं। और फिर उस जगह भी गए जहाँ से अन्तरिक्ष में उपग्रह भेजे जाते थे। यह काम अभी-अभी शुरू हुआ था और सब चाहते थे कि देखें कैसे उस रॉकेट को अन्तरिक्ष में भेजा जाता है जो उपग्रह को ले जाता है।

संयोग से उस दिन भी एक रॉकेट छोड़ा जानेवाला था।

सुरक्षा के कारणों से दर्शकों को दो मील दूर ही रोक दिया गया था।

जब खड़े-खड़े बहुत देर हो गई और रॉकेट में कोई हलचल नहीं दिखाई दी तो हाजी ने गार्ड से पूछा कि भाईजान, क्या माजरा है?

तो गार्ड ने बताया कि रॉकेट में कुछ समस्या आ गई है और वह स्टार्ट नहीं हो रहा है।

हाजी इन्तज़ार करने लगे।

लेकिन जब इन्तज़ार करते-करते शाम होने को आई तो हाजी ने गार्ड के कान में जाकर कहा, "मैं इस रॉकेट को पाँच मिनिट में स्टार्ट कर सकता हूँ। जाकर अपने साहब को बता दो।"

गार्ड ने इंटरकॉम से साहब को बताया कि यहाँ एक इंडियन साधू या फकीर या जो भी है, आया हुआ है और वो कह रहा है कि वो रॉकेट को पाँच मिनिट में स्टार्ट कर सकता है।

बात सबसे बड़े इंजीनियर नाजी हेसलस्टार्ट को बताई गई।

हेसलस्टार्ट के तो होश उड़े हुए थे। इज़्ज़त दाँव पर लगी थी। सारी दुनिया नज़रें गड़ाए थी। उसने कहा, "हाँ हाँ, फौरन बुलाओ उसको।"

तो हाजी को बड़े अदब के साथ भीतर ले जाया गया।

रॉकेट के सामने पहुँचते ही हाजी रौब से बोले, "अब आप सब वही करेंगे जो मैं कहूँगा। ओके?"

(शेष भाग पेज 38 पर)

चश्मानयादें

बड़ों ने बच्चों के लिए बहुत कुछ लिखा है, और क्या खूब लिखा है! अंकुर का यह नया स्तम्भ बच्चों का ही लिखा होगा। इसमें रोज़ाना की ज़िन्दगी डबडबाएगी और छलककर बह जाया करेगी। घर-संसार, गली-मोहल्ले, स्कूल-बाज़ार, साहित्य- सिनेमा, टीवी- इन्टरनेट इन सबकी बातें होंगी। और कई ऐसी बातें जो शायद हम इस स्तंभ के लेखक-लेखिकाओं से पहली बार सुनेंगे...

रचिता बमनिया

झाँकी

ढोल पर थाप पड़ते ही लोग इकट्ठा होने लगे। पंडाल सज चुका है। ऊपर के कमरे से राधिका को किसी ने आवाज़ लगाकर कहा, "अरे तू नीचे क्यों खड़ी है, ऊपर आ जा।" राधिका ने कमरे में जैसे ही कदम रखा कि वहाँ खड़े सभी लोग बोल उठे, "लो पार्वती भी आ गई।" लाल-पीले रंगों से लैस हाथोंवाले शख्स बोले, "क्या पार्वती तुम्हीं बनोगी?" राधिका के "हाँ" में गर्दन हिलाते ही वे बोले, "चलो तो फिर जाओ और अपनी ड्रेस बदलकर आओ।"

राधिका उनके हाथ से ड्रेस लेकर बाथरूम की ओर चल दी। थोड़ी ही देर में वह ड्रेस बदलकर उनके सामने आकर खड़ी हो गई। वो गहनेवाले बॉक्स निकाल रहे थे। उन्होंने उसके हाथ में कुछ गहने देकर कहा, "जाओ इन्हें भी पहनकर आ जाओ।" राधिका ने गहने लिए और ड्रेसिंग टेबल के सामने जाकर खड़ी हो गई।

राधिका के चेहरे पर मुस्कान खिल आई थी। उसने शर्माते हुए हार को अपने गले पर रखकर देखा और अपने पीछे खड़े बच्चों को देखने लगी। मेकअपवाले शख्स ने जब यह देखा तो वह चिल्लाकर बोले, "जिन बच्चों का यहाँ कोई काम नहीं है, वे सब नीचे चले जाएँ। ये सब लोग भी तैयार होकर नीचे ही आनेवाले हैं। जितनी देर तुम लोग यहाँ खड़े रहोगे, तैयार होने में उतनी ही देर लगेगी।"

उन शख्स ने राधिका को अपने पास कुर्सी पर बैठाते हुए उसके बालों की दो लटों को हाथ में लेकर जैल लगाते हुए कहा, "इन्हें तुम अपनी दोनों उँगलियों में लपेट लो। ये घुँघराले बन जाएँगे! तब तक मैं तुम्हारा जूड़ा बनाता हूँ।" ये कहकर वह उसके खुले बालों में कँघा करने लगे।

उन्होंने पाँच मिनट में उसका ऊँचा जूड़ा बना कर गजरा लगा दिया और नीली चुन्नी सिर पर रख कर हेयर पिन से सेट कर दी। बच्चों की भीड़ फिर से वहाँ जमा होने लगी। तभी उन्होंने अपने थैले से मेकअप किट निकाला और ज़ोर-से कहा, "कोई एक कटोरी पानी तो लाना।" राधिका के गाल शर्म से लाल हो रहे थे और बच्चे उसे एकटक देखे जा रहे थे।

राधिका के हाथ में फाउण्डेशन देकर उन्होंने कहा, "इसे अपने चेहरे पर मल लो।" पाउडर के लगते ही राधिका ने उनके बॉक्स से आइना निकालकर खुद को देखते हुए कहा, "अंकल इतना गाढ़ा मेकअप...?" वे बोले, "हाँ मेकअप ऐसा ही होता है।" चेहरे पर रूज़ लगा दिया गया। काले रंग को घोलते हुए राधिका की आइब्रो ठीक की गई। नीचे की पलकों पर लाइनर लगाकर ऊपर की पलकों पर मस्कारा लगाया और आइसेट लगाते हुए वे बोले, "लो ये लिपस्टिक अपने होंठो पर लगा लो।" उसने लिपस्टिक लगा ली। राधिका अब तक बैठे-बैठे थक गई थी।

अपने बैग से चूड़ा निकालकर वो राधिका से बोले, "लो इसे भी ठीक से हाथों में पहन लो।" जब तक राधिका ने चूड़ा पहना उन्होंने हाथ-फूल बाहों में पहना दिए और कुमकुम की शीशी हाथ में लेकर बोले, "अभी तो यह भी लगानी बाकी है।" कहकर माचिस की तीली से बिन्दिया चेहरे पर लगाने लगे। अन्त में बाजूबन्द पहनाकर बोले, "लो अब तुम हो गईं तैयार।"

राधिका अपने को सजी-धजी देखने के लिए बड़ेवाले आईने के पास जा ही रही थी कि बच्चों में शोर होने लगा, "लो भोला भी आ गया।" राधिका ने भी पलटकर उसी तरफ देखा जहाँ बच्चे भोला को देखने के लिए बढ़े जा रहे थे। राधिका ने उसे देखा और मुस्करा दी, जैसे कह रही हो - यही है मेरा भोला।

बच्चों का एक रेला भोले के पीछे-पीछे चला आ रहा था। तभी मेकअप मैन ने आवाज़ देकर कहा, "कहाँ है भोला? अरे, तुम इधर आओ, तुम्हें भी सजना है। यहाँ बैठो।" एक बड़े से थैले से कुछ सामान निकालते हुए बोले, "हाथ-मुँह धोकर आए हो न!"

लड़के ने "हाँ" में अपनी गर्दन हिला दी।

अभी तक जो बच्चे राधिका को तैयार होते हुए देख रहे थे वे एक-एक कर भोला बननेवाले लड़के को घेरकर खड़े हो गए।

मेकअप मैन ने थैले से नील का एक बड़ा-सा डिब्बा निकाला और एक कटोरी में नील निकालकर लड़के के पूरे बदन में लगाने लगे। नील के लगते ही लड़के ने एक झुरझुरी भरी और मुस्कराते हुए इधर-उधर हिलने लगा। वहाँ खड़े बच्चे बोले, "अरे इसे तो गुदगुदी हो रही है।" तभी मेकअप मैन डाँटते हुए बोले, "चुपचाप सीधे खड़े रहो। अगर खड़े नहीं हुए तो तुम्हारा मेकअप नहीं हो पाएगा।"

जब भोले का पूरा शरीर नीला हो चुका तो उन्होंने उसके सारे बालों को इकट्ठ किया और सरदारों की तरह सिर पर जूड़ा बनाते हुए कहा, "ज़रा सामने रखी जूड़ा-पिन तो देना।" भोले ने अपने सिर पर पहली पिन लगते ही "ऊई" के साथ उनका हाथ पकड़कर कहा, "थोड़ा धीरे-से लगाओ चुभ रही है और दर्द भी हो रहा है।" अब उन्होंने सारी पिनें एक साथ उठाकर अपने मुँह में दबा लीं और एक-एक कर लगाते हुए पूरा जूड़ा बना दिया।

अब उन्होंने मोटी-सी पेंसिल से उसके आइब्रो को काला करते हुए सेट किया। इसके बाद पेंसिल को भोले के हाथ में देते हुए बोले, "लो अब इससे अपनी आँखों में मोटा-मोटा काजल लगा लो।"

भोले ने पास पड़े छोटे-से शीशे में देखते हुए अपनी आँखों में काजल लगा तो लिया लेकिन सही न लगने की वजह से वह आँखों के चारों ओर फैल गया। बच्चे यह देखकर हँसने लगे।

उधर राधिका भी भोले को सजते हुए देख मुस्करा रही थी तो किसी बच्चे ने ज़ोर से कहा, "अरे भाई देखो-देखो, राधिका भी हँस रही है।" भोले ने भी उस तरफ देखा और मुस्करा दिया।

मेकअप मैन ने भोले का काजल ठीक कर

चित्रः नीलेश गहलोत

उसकी पलकों में ब्लू रंग का लाइनर लगा दिया और भोले से आँखों को बन्द कर थपथपाने को कहा गया। भोला अब बड़ी-बड़ी आँखोंवाला लग रहा था। अब माथे पर तीसरी आँख बनाने की बारी थी। भोले को गुस्सा आ रहा था। वह आज से पहले कभी भी इतनी देर के लिए एक जगह पर नहीं बैठा था।

मेकअप मैन ने थैले से एक बड़ा नाग निकाला, जिसे देखकर सारे बच्चे साँप-साँप कह इधर-उधर छिटक गए। यह देख मेकअप मैन ने सारे बच्चों को चुप हो जाने को कहा और उन्होंने सभी बच्चों को बाहर निकालकर दरवाज़ा बन्द कर लिया।

बच्चे बाहर निकल तो लिए लेकिन दरवाज़े से सटी छोटी-सी खिड़की से झाँक-झाँककर देखने लगे। इधर मेकअप मैन जब भोले के गले में नाग डालने लगे तो वह डरते हुए बोला, "नहीं-नहीं मुझे नहीं पहनना है यह।" मेकअप मैन बोला, "अरे डरो नहीं! यह नकली है, कुछ नहीं होगा।" पर भोला मना ही किए जा रहा था। उसके नखरे को देखकर वह बोले, "अगर इसे नहीं पहनोगे तो भोला बनने का क्या फायदा? बाहर सब तुम्हारा मज़ाक बनाएँगे।" इतना सुनते ही भोले ने धीरे-से कहा, "अच्छा तो ठीक है, पहना दो।"

भोला ने "हाँ" तो कर दिया लेकिन मन ही मन डर रहा था। मेकअप मैन ने नाग भोले के गले में डाल दिया और साथ ही दो मोटे-मोटे रुद्राक्ष की माला और फूलों की एक बड़ी-सी माला उसके गले में डाल दी। इसी के साथ दोनों हाथों में रुद्राक्ष के बाजूबन्द भी दो-तीन जगह पर पहना दिए।

ये सब पहनने के बाद भोला ने कहा, "क्या अब मैं खुद को आईने में देख सकता हूँ?" वह खुद को देखने के लिए बेचैन हो रहा था और शरमा भी रहा था। तभी मेकअप मैन ने उसके हाथ में लिपस्टिक देकर कहा, "लो इसे गाढ़ी-गाढ़ी अपने होठों पर लगा लो।" यह कहकर उन्होंने ड्रेसिंग टेबल पर पड़ी मृगछाल उठाई और भोले की कमर पर लपेटने लगे। यह देखकर भोला बोला, "अंकल ये क्या मुझे शेर की खाल पहना रहे हो?" यह सुनकर वह बड़े ज़ोर-से हँसे और बोले, "अरे यही तो पहनते थे भोले। तो तुम क्यों नहीं पहनोगे?" एक और मृगछाल को भोले के सीने पर लपेटकर वे बोले, "अब बन गए तुम पूरे भोले। यह पकड़ लो त्रिशूल और निकल जाओ।"

मेकअप मैन ने अपना पूरा सामान समेटा और बाहर निकल गया। उसके निकलते ही बच्चों का हुजूम फिर से कमरे के अन्दर दाखिल हो गया। भोला बड़े आईने के सामने खड़ा होकर खुद को देखते हुए मुस्कराने लगा। तभी बाहर से आवाज़ आई, "भोला अब तो इन्तज़ार खतम करो और बाहर आओ।"

नीचे से ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें आ रही थीं, "भोले की झाँकी आनेवाली है। सभी लोग नीचे बैठ जाएँ!" शोर मचाते बच्चों के हुजूम के साथ दोनों ज़ीने से उतर रहे थे। दोनों जाकर पटिया पर खड़े हो गए। राधिका नज़रें नीचे किए खड़ी ज़रूर थी, लेकिन उसकी आँखें अपनी माँ को तलाश रही थीं कि इस

(शेष भाग पेज 43 पर)

मेरा पन्ना

एक कछुआ

चित्रः जगदीश जोशी

रविवार का दिन था। साथ में मेरी मम्मी, ताई, मैं और मेरी दीदी चारा काटने गए थे। अचानक मेरे सामने एक कछुआ आ गया। मैंने मम्मी से कहा, "यहाँ पर एक कछुआ है।" जितनी भी औरतें मेरे साथ में थीं सब खुश हो गईं। और उसे पकड़कर मैंने एक कपड़े में बाँधकर रख दिया और फिर चारा काटने लगी। चारा काटने के बाद हम सब घर गए। मैंने मम्मी से कहा, "मम्मी एक कछुआ बीस नाखून का मैंने पाया है।" तो मम्मी खुश हो गई। मैंने कहा, "मम्मी बीस नाखून का कछुआ बिक जाता है।" मम्मी ने कहा, "अच्छा इसे घर लेकर चलो।" फिर मुझे एक बात याद आई। मैंने मम्मी से कहा, "मम्मी कछुआ एक लाख में बिक जाते हैं।" जहाँ से मैंने उसे लाया था वहाँ पर उसके बीस नाखून थे और जब घर आकर देखा तो अठारह थे। फिर पापा ने कहा, "जाने दो बेटा। अगर 18 नाखून हैं तो इसे हम पकाकर खा जाएँगे।" जिस दिन पापा ने ऐसा कहा उस दिन मैंने जानकर कहा, "पापा आज मेरा व्रत है। इसे आज मत मारिए।" तो पापा ने कहा, "ठीक है।" फिर मंगलवार को मम्मी चली गईं चारा काटने। फिर मैंने कहा, "तुम आगे चलो मैं पीछे-से आती हूँ।" मम्मी आगे चली गईं और मैंने उसे एक थैले में रखकर जहाँ से लाई थी वहीं पर ले जाकर रख दिया।

—दीपा कुमारी, आठवीं,
रा. प्रा. विद्यालय खिलाड़िया, खटीमा, उधमसिंहनगर, उत्तराखण्ड

पॉलीबैग को ना कहना

ना इस्तेमाल करो भाई
पॉलीथीन बैग को
न इस्तेमाल करो भाई
क्योंकि पॉलीबैग
बड़े खराब हैं भाई

पॉलीथीन को खाकर
गाय मर जाएगी
जिससे घर में दूध की
कमी हो जाएगी
पॉलीबैग के कारण
सीवर बन्द हो जाएगा
जिससे सड़कों पर
पानी भर जाएगा

खेतों के नए पौधे भी
साँस नहीं ले पाएँगे
सब्ज़ी महँगी हो जाएँगी
फल थोड़े ही आएँगे
सब बच्चे ही मिलकर
इसका हल निकालेंगे
घर-घर प्रचार करके
पॉलीबैग को ना कहना
सिखलाएँगे

कपड़े व कागज़ के थैले
घर से लेकर जाएँगे
अपनी इस धरती को
अब हम ही बचाएँगे

—अंशिका वर्मा, छठी, के के अकेडमी
लखनऊ, उ. प्र.

चिड़िया और शेर

एक चिड़िया थी। वो चिड़िया रोज़ जंगल में जाती थी। एक दिन उस चिड़िया को जंगल में शेर मिला। चिड़िया बोली कि शेर साहब कहाँ जा रहे हो? शेर ने बोला कि बाज़ार जा रहा हूँ। क्यों जा रहे हो? क्योंकि मेरी बीबी का बर्थडे है। शेर ने बोला, "तुम भी आना और अपने दोस्तों को भी लाना।" चिड़िया बोली कि मैं क्यों नहीं आऊँगी मैं तो ज़रूर आऊँगी। चिड़िया घर पहुँचके अपने दोस्तों को बताने गई। दोस्तो इधर आओ एक ताज़ा खबर है।

एक चिड़िया बोली, "क्या बात है?" चिड़िया बोली कि शेर ने अपन को उसकी बीबी के बर्थडे में बुलाया है। उसके पासवाली चिड़िया बोली, "शेर अपन को खा गया तो?" चिड़िया बोली, "नहीं खाएगा।" फिर सब जा रहे थे। फिर अचानक हवा आई फिर सब चिड़िया खत्म।

—दिलबर,
मुस्कान संस्था भोपाल, म. प्र.

प्यारा शैतान

एक चूहा था। वो बहुत शैतान था। वो दिखने में बहुत प्यारा था। एक दिन बिल्ली आई तो वह नहीं डरा। वो बिल्ली का सारा दूध पी गया। फिर उस बिल्ली को पता चला कि वो शैतान चूहा मेरा सारा दूध पी गया। फिर उस बिल्ली को गुस्सा आ गया। फिर उस बिल्ली ने चूहे को खा लिया। फिर वो शैतान चूहा मर गया।

—साम्भवी वैद्य, तीसरी,
कालिदास मोंटेसरी स्कूल उज्जैन, म. प्र.

—गार्गी कोलपकर, छठी,
आर्यनस वर्ल्डस स्कूल, पुणे

— गार्गी शिंगड़े, 10 साल, सेंट जोसेफ को-एड स्कूल, भोपाल

डाकिया

देखो एक डाकिया आया
थैला एक हाथ में लाया
पहने है वो खाकी कपड़े
चिट्ठी कई हाथ में पकड़े
बाँट रहा घर-घर में चिट्ठी
मुझको भी दी लाकर चिट्ठी
चिट्ठी में सन्देशा आया
शादी में था हमें बुलाया
शादी में हम जाएँगे
खूब मिठाई खाएँगे

— प्रस्तुतिः इज़राइल, दस वर्ष, अंक इण्डिया संस्था नोएडा, उ. प्र.

अर्थ मैटर्स - मेरा अनुभव

अर्थ मैटर्स वर्कशॉप में हमने बहुत सारी गतिविधियाँ करीं। उनमें से प्रकृति की सैर, साबुन से नक्काशी, कचरे से मूर्ति बनाना, चित्र बनाना आदि मुझे खासी पसन्द आईं। इस वर्कशॉप ने हमें सिखाया कि वास्तव में हम कितनी बुरी तरह अपने इस खूबसूरत ग्रह पृथ्वी को नष्ट कर रहे हैं। यह किसी विज्ञान या भूगोल की क्लास की तरह नहीं था जहाँ हमें हमें सिर्फ चुपचाप बैठकर टीचर के लैक्चर्स सुनने होते हैं। इस वर्कशॉप में शिक्षकों ने हमें यह सब गतिविधियाँ कराने के साथ-साथ सिखाया। उन्होंने हमें तीन बेहतरीन गीत भी सिखाए। उनमें से मुझे सबसे ज़्यादा वेलिच वन पसन्द आया जिसका मतलब होता है बाँस के जंगल। मैं विज्ञान और कला की इस वर्कशॉप में पहली बार शामिल हुआ था। विज्ञान में हमने अलग-अलग उपकरणों, अलग-अलग तरह के अम्लों व रसायनों आदि के बारे में सीखा और साथ ही साथ विभिन्न प्रकार के पेड़ों के बारे में भी जाना। मुझे इस कैंप में आकर बहुत अच्छा लगा। और आखिर में मैं कहना चाहता हूँ कि अवर अर्थ रिएली डज़ मैटर।

— सई पालेकर, 11 वर्ष, पुणे, महाराष्ट्र

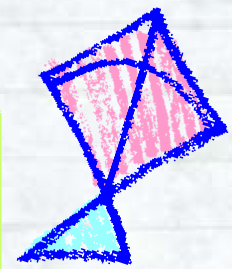

—ज़ोया, छह साल,
मिराम्बिका, दिल्ली

मेरा पन्ना

बच्चा चोर

हम लोग रीमा और मैं चारामा जा रहे थे तो एक बस आई। उसमें एक भी आदमी नहीं था और उसमें रस्सी बँधी हुई थी। तो रीमा के पैर के पास बस को टेक रहा था तो मैं भागी। और रीमा को पकड़ रहे थे तो मेरे पापा आए। तो फिर गाड़ी को चलाने ही वाले थे। फिर मैं और मेरे पापा नहीं छोड़े। बहुत छुड़ाने की कोशिश की लेकिन उन लोगों ने फिर भी नहीं छोड़े और ले गए। और दुकान के पास गए तो पुलिस ने देखा तो बोले, अरे इस बस में से बच्ची की आवाज़ आई। तो पुलिस ने बस को रुकवाया और पुलिस ने बच्चे को धरा और वो चोर जो बस में था उसको पुलिस ले गए और पुलिस थाने में बन्द कर दिया।

—पूर्णिमा यादव, चौथी,
अजीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़

—अन्नय खरे, छठी, सागर पब्लिक स्कूल, भोपाल

क्या कीट सूँघते और स्वाद लेते हैं!

भरत पुरे

चकमक के मई अंक में छपे लेख "क्या कीट भी बोलते-सुनते हैं?" में हमने देखा था कि गला या कान न होते हुए भी कीट कई तरह की आवाज़ें निकालते हैं और अपने खास अंगों से सुनते भी हैं। स्वाद लेने और सूँघने के मामले में भी ऐसा ही कुछ है...

अकसर ज़ुकाम होने पर हमारे सूँघने की शक्ति कम हो जाती है और हम जो भी खाते हैं उसका स्वाद ही नहीं आता है। कीटों में भी स्वाद और सूँघ पाने के बीच ऐसा ही रिश्ता है। इन दोनों सम्वेदनाओं में स्पष्ट रूप से अन्तर नहीं दिखता। हमने तितलियों, भौंरों, मधुमक्खियों आदि को विभिन्न प्रकार के फूलों पर मँडराते देखा है। वे जल्दी-जल्दी एक से दूसरी तरह के फूलों पर जाते हैं। और फिर कुछ खास फूल को चुन लेते हैं। तो, उन्हें कैसे पता चलता है कि कौन-सा फूल उनके लिए उपयोगी है और कौन-सा नहीं? कीटों में कोई जीभ या नाक दिखाई नहीं देती। हाँ, उनके मुँह के अंगों से घिरी एक जीभनुमा रचना ज़रूर होती है। लेकिन स्वाद लेने से इसका कोई लेना-देना नहीं है। उनके शरीर में कुछ अंगों पर स्वाद और सूँघने की क्षमतावाली खास संवेदी कोशिकाओं के समूह होते हैं।

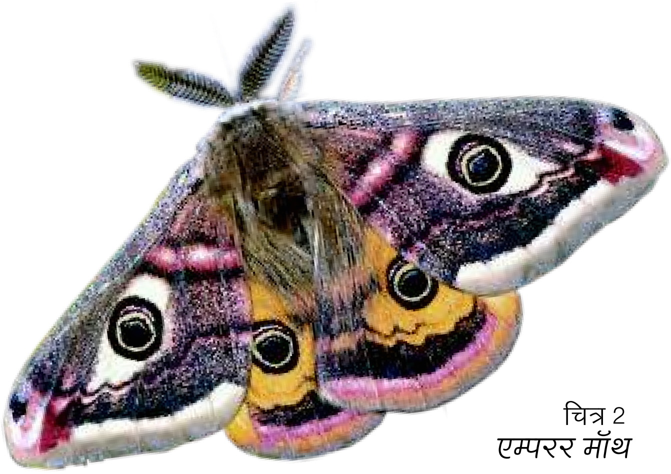

चित्र 2
एम्परर मॉथ

वैज्ञानिकों के शोध से पता चलता है कि कीटों के पूरे शरीर पर यहाँ-वहाँ खास तरह की रसायन ग्रहण करनेवाली कोशिकाएँ होती हैं जो तरल और गैसों के रूप में स्वाद और गन्ध को पहचान लेती हैं। ये कोशिकाएँ ऐन्टिना, मुँह और टाँगों पर ज़्यादा होती हैं। ज़्यादा गाढ़े (सान्द्र) तरल रसायनों से अलग-अलग स्वाद का ज़ायका लिया जाता है और कम गाढ़े के गैस रूप में रसायनों को सूँघनेवाली संवेदी कोशिकाएँ ग्रहण करती हैं। पानी में रहनेवाले कुछ भृंग (बीटल्स) गैस और तरल दोनों ही तरह के रसायनों के प्रति संवेदनशील होते हैं। ज़मीन पर चलनेवाले कीट जैसे कॉकरोच, झींगुर आदि में स्वाद कोशिकाएँ मुँह (मुखांगों और मुखगुहा) में होती हैं जबकि तितलियों, पतंगों, घरेलू मक्खियों, मधुमक्खियों, ततैया आदि में ये ऐन्टिना पर अधिक होती हैं।

चित्र 1
जलीय बीटल डाइटिस्कस

पाया गया है कि जलीय बीटल डाइटिस्कस (चित्र 1) तो हमारी तरह मीठा, खारा, खट्टा और कड़वा चारों स्वादों के चटखारे ले सकते हैं जबकि चींटियाँ, मधुमक्खियाँ और ततैया केवल मीठे और फीके पानी के घोल में ही अन्तर कर पाते हैं। किस चीज़ को खाना है इसका चुनाव कीट स्वाद से ही करते हैं। और स्वाद का पता रसायन ग्रहण करनेवाली कोशिकाओं से चलता है। पौधों पर निर्भर रहनेवाले टिड्डे और अन्य कीट भी खाने की चीज़ों का चयन उनमें मौजूद रसायनों से ही करते हैं। जिन पौधों में अम्ल, लवण, एल्कोहल, एमिनो अम्ल और तैलीय पदार्थों की सान्द्रता अधिक होती है, उन्हें कीट नहीं खाते हैं जबकि कम सान्द्रतावाले अम्लीय और लवणीय पौधों को वे पसन्द करते हैं।

कीटों द्वारा सूँघना और खास गन्ध की पहचान

अधिकाँश कीटों में सूँघने सम्बन्धी कोशिकाएँ इनके ऐन्टिना पर जबकि तितलियों में उनकी शुंड पर होती हैं। मनुष्यों की तरह कीटों के शरीर से भी खास तरह की गन्ध निकलती है। हर प्रजाति के कीटों में नर या मादा या फिर दोनों के शरीर से खास गन्ध निकलती है। और इसे उसी प्रजाति के दूसरे सदस्य ही ग्रहण कर सकते हैं। इन गन्धयुक्त पदार्थों को फेरोमोन्स (Pheromones) कहते हैं। ये पदार्थ तरल रूप में त्वचा से निकलते हैं और गैस के रूप में हवा से दूर-दूर तक अपनी ही प्रजाति के अन्य सदस्यों तक पहुँचते हैं। इसलिए इन्हें रसायन सन्देश वाहक (केमिकल मैसेंजर) भी कहा जाता है।

कीट इन गन्धयुक्त पदार्थों का इस्तेमाल कई तरह से करते हैं। जैसे, प्रजनन के लिए साथी को आकर्षित करने के लिए, अपनी प्रजाति के दूसरे सदस्यों की पहचान के लिए; अण्डे देने की जगह चुनने के लिए तथा खाने की खोज जैसे कामों के लिए। इसके कुछ रोचक उदाहरण हैं -

1. अधिकाँश पतंगों की मादाएँ हवा में फेरोमोन फैलाकर नर साथियों को आकर्षित करती हैं। मादा एम्परर मॉथ (चित्र 2) की गन्ध तो 11 किलोमीटर तक दूर बैठे नर पतंगों को आकर्षित कर सकती है। इस गन्ध को नर के ऐन्टिना ग्रहण करते हैं। यदि उनके ऐन्टिना को काट दिया जाए या उन पर मोम लगा दी जाए तो वे इन संकेतों को पकड़ नहीं सकते हैं।

चित्र 3
रेशम बनानेवाले पतंगा

2. रेशम बनानेवाले पतंगों के जिन ककून से वयस्क मादाएँ निकलती हैं वे तुरन्त ही पेट के पिछले सिरे से एक खास रसायन छोड़ती हैं। (चित्र 3) कुछ ही देर में आसपास के नर पतंगे मादा के इर्द-गिर्द अजीब तरह से पंख फड़फड़ाकर नाचने लगते हैं। इसके बाद प्रजनन क्रिया होती है।

3. कुछ प्रजातियों के कीटों में नर-मादा दोनों ही गन्ध युक्त पदार्थ हवा में फैलाते हैं। इससे वहाँ के सभी सदस्य एक जगह पर इकट्ठा हो जाते हैं और सामूहिक प्रजनन क्रिया को अन्जाम देते हैं।

हानिकारक कीटों को नियंत्रण में रखने के लिए कीटों के इस स्वभाव का उपयोग किया जा रहा है। किसी खास प्रजाति द्वारा छोड़े गए रसायन का विश्लेषण कर उसे खेत में एक जगह पर रख दिया जाता है। इससे कीट वहाँ पर खिंचे आते हैं। उसी जगह पर कीटनाशक भी रख दिया जाता है।

एक था हाजी एक था नाजी

(पेज 28 का शेष भाग)

सब पीछे हटकर खड़े हो गए।

हाजी बोले, "रॉकेट को बाईं तरफ झुकाओ।"

रॉकेट को बाईं तरफ झुकाया गया।

"और थोड़ा झुकाओ।" हाजी बोले।

और थोड़ा झुकाया गया।

दो मिनट रॉकेट ऐसे ही झुका रहा।

हाजी बोले, "अब सीधा कर दो।"

रॉकेट सीधा कर दिया गया।

"अब स्टार्ट करो!" हाजी बोले।

स्टार्ट किया गया....और रॉकेट स्टार्ट हो गया!! आग का गुब्बारा-सा निकला और देखते ही देखते रॉकेट ऊपर उठता-उठता सीधे आसमान के पार निकल गया।

सारे लोग झूम उठे। तालियों की गड़गड़ाहट से माहौल गूँज उठा। सबने हाजी को गले लगा लिया।

उसी समय कंट्रोल रूम से नाजी हेसलस्टार्ट भागे-भागे आए और आते ही हाजी से लिपट गए और हाजी के दोनों गाल चूमने लगे।

नाजी हेसलस्टार्ट ने कहा, "थैंक्यू मेरे दोस्त, मेरे भाई, मेरे बाप, मेरे आका, आज तो तुम्हारे रूप में मानो भगवान ही आ गए हमारी मदद करने। लेकिन ये तो बताओ, ये चमत्कार तुमने किया कैसे? क्या तुम जानते थे कि पैंतालीस डिग्री झुकाने से रॉकेट स्टार्ट हो जाएगा?"

हाजी बड़ी मासूमियत से बोले, "हमारे यहाँ स्कूटर ऐसे ही स्टार्ट होता है।"

चित्र 4
चींटियों को एक कतार में आना-जाना

4. तुमने चींटियों को एक कतार (चित्र 4) में एक रास्ते पर आते-जाते देखा होगा। दोनों दिशाओं से आते हुए वे ज़रा देर के लिए रुकती हैं और फिर आगे बढ़ जाती हैं। समूह का खोजी दल जब खाने का स्रोत ढूँढ लेता है तो वे रास्ते में एक खास रसायन छोड़ते हुए वापिस कॉलोनी की ओर चलते हैं। इसी रास्ते पर चलते हुए दूसरे सदस्य भी स्रोत तक पहुँच पाते हैं।

5. कई कीट दूसरे जीवों पर आश्रित होते हैं। इन कीटों की मादाएँ पोषक जन्तुओं के शरीर में अण्डे देती हैं। और पोषक जन्तु तक छोड़ी गई खास गन्ध के सहारे ही वो उस तक पहुँच पाती हैं। (चित्र 5)

6. मधुमक्खियाँ भी दूसरे श्रमिक सदस्यों की सुविधा हेतु अपने छत्ते और मकरन्दवाली जगहों की निशानदेही खास रसायनों से ही करती हैं।

चित्र 5
पोषक जन्तु के शरीर में अण्डे देती कीट

नींद की थपकी

प्रभात

सोजा सोजा रे सोजा रे मेरा लाल
आँखों में निन्दिया झुक रही है

बाड़े में तो गैया सो गई
बन में सो गए मोर
चोरी करते-करते थक गए
सो गए सारे चोर

सोजा सोजा रे सोजा रे मेरा लाल
आँखों में निन्दिया झुक रही है

नीमों में तो बिल्ली सो गई
बागों में सोए बिलाव
नदी किनारे मछली खाकर
सो गए ऊदबिलाव

सोजा सोजा रे सोजा रे मेरा लाल
आँखों में निन्दिया झुक रही है

रैना की गोदी में सो गए
टिमटिम करते तारे
पानी की गोदी में सो गया
चन्दा घास किनारे

सोजा सोजा रे सोजा रे मेरा लाल
आँखों में निन्दिया झुक रही है

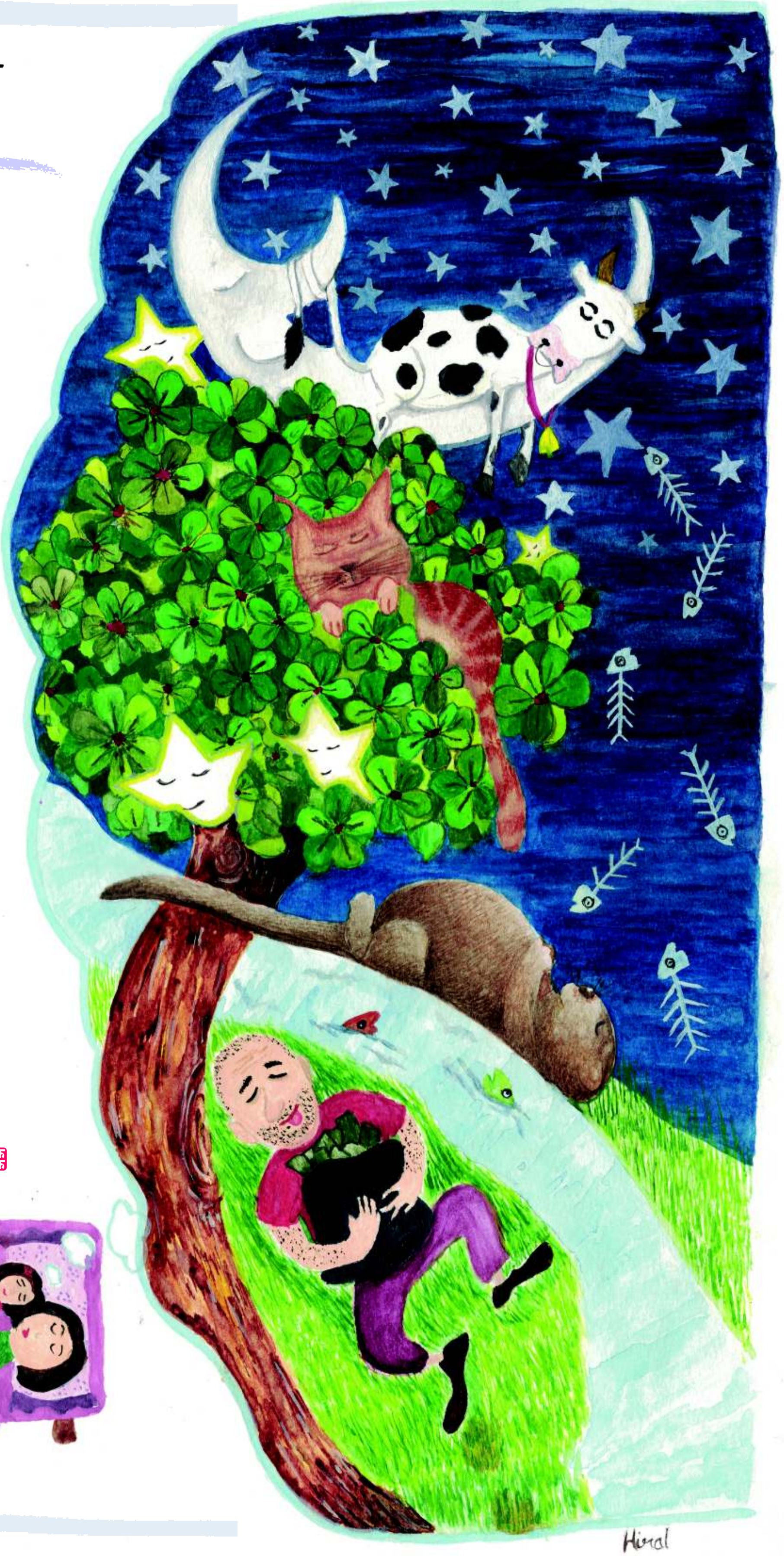

चित्रः हीरल खोना

चीफ सिएटल की चिट्ठी

बच्चो,

मन तो मेरा करता है कि हम सब मिलकर यह पत्र किसी जंगल, मैदान, नदी के किनारे या पहाड़ की ढलान पर बैठकर पढ़ें। इसमें कही गई बातें वहाँ अधिक खुलेंगी। पर ऐसा किया कैसे जाए? एक उपाय अभी अचानक मुझे सूझा है। क्यों न हम सब इस पत्र को या इसके किसी छोटे हिस्से को याद कर लें? और जब भी हम किसी खुली, मन को खुश करनेवाली जगह पर हों, तब मन ही मन या ज़ोर से उसे दोहराएँ? और सोचें कि हम एक-दूसरे को/से इसे सुना/सुन रहे हैं?

तुम जानते होगे कि पहले अमरीका में कोई दूसरे लोग रहते थे। बाहर से आए लोगों ने उन्हें रेड इंडियन नाम दिया। किन्तु, उनके अपने अलग नाम थे। इन बाहरी लोगों के पास बारूद-बन्दूकों की ताकत थी। वहाँ के मूल लोगों के पास सिर्फ अपनी धरती-आसमान और उस पर रहनेवालों के लिए प्यार था। वे हार गए। बाहरी लोगों का वहाँ बोल-बाला हो गया। लेकिन, यह पत्र जो उनके मुखिया ने बाहरी लोगों के मुखिया को लिखा था – इससे साफ लगता है कि उसे सिर्फ अपनी चिन्ता नहीं सता रही थी। वह आज से सौ, दो सौ, हज़ार साल बाद पैदा होनेवाले बच्चों के बारे में सोच रहा था। यदि तितलियाँ, जंगल का सन्नाटा, हवा, नदियों का कल-कल गान नहीं बचे तो वे बच्चे क्या करेंगे? उसे अपने हारने की नहीं, बच्चों के बच्चों के बच्चों के बच्चों के हारने की चिन्ता है।

यह पत्र दरअसल एक मन से निकली प्रार्थना है। इसीलिए मैंने तुमसे कहा कि क्यों न हम सब अलग-अलग जगह और समय पर इसे साथ-साथ पढ़ें/सुनें?!

सन् 1852 में अमरीका के मूलनिवासियों के मुखिया चीफ सिएटल द्वारा अमरीकी सरकार को लिखा पत्र –

प्रस्तुति - शम्पा शाह

चित्रः जीतेन्द्र चौरसिया

वॉशिंग्टन से राष्ट्रपति ने पत्र लिखकर हमारी ज़मीन खरीदने की इच्छा ज़ाहिर की है। लेकिन तुम आकाश को खरीद या बेच कैसे सकते हो? और धरती? हमारे लिए यह विचार बिलकुल अजनबी है। यदि हम हवा की ताज़गी और पानी की झिलमिलाहट के मालिक नहीं हैं, तब तुम उसे खरीद कैसे सकते हो?

इस धरती का चप्पा-चप्पा मेरे लोगों के लिए पवित्र है। चीड़ की हर चमकती सुईनुमा पत्ती, हर रेतीला किनारा, कीट-पतंगा – मेरे लोगों का अनुभव और स्मृति के दायरे में यह सभी पवित्र हैं।

हमारे लिए पेड़ के भीतर बहती रसधारा वैसी ही है जैसे हमारी रगों में दौड़ता खून है। हम धरती का और वह हमारा हिस्सा है। खुशबूदार फूल हमारी बहनें हैं। ये भालू, हिरण, चील हमारे भाई हैं। पथरीली कगार, चरागाहों का रस, घोड़े के शरीर की गरमाहट और मनुष्य सब एक ही परिवार के हैं।

नदी-नालों में झिलमिलाता पानी सिर्फ पानी नहीं बल्कि हमारे पूर्वजों का लहू है। यदि हम अपनी ज़मीन तुम्हें बेच देते हैं तो तुम्हें यह याद रखना होगा कि वह पवित्र है। साफ पानी में डोलता हर प्रतिबिम्ब हमारे लोगों के जीवन और उनकी स्मृतियों में बसी किन्हीं घटनाओं को बयान करता है। पानी की कलकल ध्वनि दरअसल मेरे पिता के पिता की आवाज़ हैं। इसलिए तुम्हें नदियों को वैसा ही स्नेह देना होगा जैसा तुम अपने किसी भाई को दोगे।

यह धरती मनुष्य के लिए नहीं,
मनुष्य धरती के लिए बना है।

चित्रः स्निग्धा बनर्जी

यदि हम तुम्हें अपनी धरती बेच देते हैं तो याद रखना कि हवा हमारे लिए अमूल्य है, कि हवा अपने प्राण हर जीव के साथ बाँट कर उसे जिलाए रखती है। वह स्निग्ध हवा जिसने हमारे पितामह को पहली साँस दी थी, उसी ने उनकी अन्तिम साँस को गोद लिया था। हवा ने ही हमारे बच्चों में प्राण फूँके। इसलिए यदि हम तुम्हें अपनी धरती बेचते हैं तो तुम्हें उसे अछूते, पवित्र स्थान की तरह रखना होगा जहाँ जाकर मनुष्य फूलों की भीनी सुगन्ध से व्याप्त हवा को अपनी साँसों में भर सके।

क्या तुम अपने बच्चों को वह सिखाओगे जो हमने अपने बच्चों को सिखाया है? यही, कि धरती हमारी माँ है। यह बात कि धरती के साथ जो कुछ भी घटता है वह सब धरती के बच्चों के साथ भी घटता है।

इतना हम जानते हैं: यह धरती मनुष्य के लिए नहीं, मनुष्य धरती के लिए बना है। सारी चीज़ें आपस में जुड़ी हुई हैं जैसे लहू हम सबको जोड़ता है। जीवन के इस ताने-बाने को मनुष्य ने नहीं बुना, वह तो महज़ इसका एक रेशा है। इस जीवन-जाल के साथ वह जो कुछ भी करता है, वह दरअसल खुद के साथ करता है।

लेकिन एक बात तय है: हमारा ईश्वर तुम्हारा भी ईश्वर है। धरती उसे प्यारी है और धरती को तकलीफ पहुँचाना उस सृष्टा का अपमान करना है।

तुम्हारा भाग्य हमारे लिए रहस्य है। क्या होगा जब सारे भैंसे काटे जा चुके होंगे? जंगली घोड़े पालतू बना दिए जा चुके होंगे? क्या होगा जब जंगल के सारे भेद भरे कोने हज़ारों मनुष्यों की गन्ध से बोझिल हो जाएँगे और पकी पहाड़ियों का दृश्य बोलनेवाले तार के खम्भों से भर जाएगा? जंगली झाड़ियाँ कहाँ होंगी? गायब! चील कहाँ होंगी? लापता!

हवा से बातें करनेवाले घोड़े से अलविदा कहना कैसा होता होगा? और शिकार से अलविदा कहना? यह शायद जीवन का अन्त और बचे रहने की शुरुआत होगी।

जब अपने जंगलीपन के साथ आखिरी आदिवासी भी गुम हो जाएगा और उसकी स्मृति चरागाह पर से गुज़रते बादल की छाया की मानिन्द भर रह जाएगी, तब भी क्या ये जंगल, ये कूल-किनारे बचे रहेंगे? क्या मेरे लोगों की आत्मा का कोई कतरा बचेगा?

हमें इस धरती से वैसे ही प्यार है जैसे एक नवजात को अपनी माँ की धड़कन से होता है। इसलिए यदि हम अपनी यह धरती तुम्हें बेच भी देते हैं तो उसे वैसा ही प्यार देना जैसा हम उसे देते आए हैं। उसकी वैसी ही देखभाल करना जैसी हम करते आए हैं। अपने दिलो-दिमाग में धरती की उस छवि की स्मृति को बचाए रखना जैसी वह तुम्हें मिली थी। तमाम आनेवाली पीढ़ियों के बच्चों के लिए इस धरती को बचाकर रखना और उसे प्यार करना जैसे ईश्वर हमें प्यार करता है।

जैसे हम इस धरती का हिस्सा हैं वैसे ही तुम भी इस धरती का हिस्सा हो। यह धरती हमारे लिए अनमोल है। यह तुम्हारे लिए भी अनमोल है। एक बात हम जानते हैं: ईश्वर केवल एक है। मनुष्य कोई भी हो गोरा या काला, वह एक है। अन्ततः तो हम भाई-भाई हैं।

झाँकी

(पेज 31 का शेष भाग)

समय उसकी माँ उसके बारे में क्या सोच रही होगी। दोनों धीरे-धीरे बातें भी कर रहे थे। राधिका ने कहा, "तुम्हें पता भी है कि आज क्या है?" भोला धीरे-से बोला, "हाँ...हाँ... आज हमारे बेटे गणेश का जन्मदिन है।" इतना कह कर वह मुस्करा दिया। राधिका भी हलके-से हँस दी और बोली, "पता है गणेश कौन बना है?" भोले ने "न" में गर्दन हिलाते हुए उसकी तरफ देखा तो वह बोली, "शिवानी का छोटा भाई संदीप। पर पता नहीं वह है कहाँ?" "अरे, ऊपर तैयार हो रहा होगा, बस आता ही होगा।"

इधर लोगों का शोर बढ़ता ही जा रहा था और ढोल की थाप पर लोग नाच रहे थे। बीच-बीच में कहीं-कहीं से आवाज़ भी आ रही थी कि "भाई, झाँकी कहाँ है? अभी तक नहीं आई।" "आती ही होगी भाई, शान्त बैठे रहो।"

पाँच मिनट बाद ही चार-पाँच साल का एक बच्चा चेहरे पर सूँड वाला मुखौटा पहने नीचे उतरा। उसकी छोटी-छोटी आँखें, बड़े-बड़े कान और माथे पर त्रिशूल का तिलक देखकर बच्चे फिर से शोर मचाने लगे। वह बहुत ही सुन्दर लग रहा था। उसे देखकर पार्वती और भोले ने एक-दूसरे की तरफ देखा और मुस्करा दिए। राधिका तो अपनी ओढ़नी का पल्ला मुँह में दबाकर दूसरी ओर देखने लगी।

गणेश आकर इन दोनों के बीच में खड़ा हो गया। भोले ने उसकी ओर प्यार से देखा और बोला, "पता है न कि आज के लिए तू हम दोनों का बेटा है?" उसने भी "हाँ" में गर्दन हिला दी और उचक-उचककर लोगों को देखने लगा।

तभी पंडितजी आए और बोले, "अरे भाई इनको कुर्सी पर तो बैठाओ।" तीनों जाकर कुर्सी पर बैठ गए और लोगों ने भोला-पार्वती का जयकारा लगाया।

रचिता बमनिया, ग्यारहवीं, उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, दिल्ली में पढ़ती हैं।

बिल्लू गोल मुटल्लू

अमिताभ मुखर्जी

एक था बिल्लू
गोल मुटल्लू

चुहिया से हुई मुलाकात
बोला, कहनी है इक बात

मारो गोली
चुहिया बोली

बातें छोड़ो, आज है जल्दी
पूँछ उठाकर चुहिया चल दी।

आगे-आगे चुहिया भागे
पीछे बिल्लू गोल मटल्लू।

चुहिया घुस गई बिल में
बातें रह गईं दिल में।

चित्र - शुभम लखेरा

WHITE TIGER
Mukundpur
Satna
विश्व की पहली
व्हाइट टाइगर सफारी
एवं जू का
लोकार्पण समारोह
3 अप्रैल 2016 मुकुन्दपुर, सतना
सौंदर्य और शक्ति की अद्भुत कृति
WHITE TIGER SAFARI & ZOO
Mukundpur
श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
के मुख्य आतिथ्य
और
श्री प्रकाश जावड़ेकर
केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन
की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।
इस अवसर पर
श्री नरेन्द्र सिंह तोमर
केन्द्रीय मंत्री, इस्पात एवं खान
की विशिष्ट उपस्थिति एवं
श्री गौरीशंकर शेजवार
मंत्री, वन
श्री राजेन्द्र शुक्ल
मंत्री, ऊर्जा, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा,
खनिज साधन एवं जनसंपर्क
श्री राजेन्द्र कुमार सिंह
उपाध्यक्ष, विधानसभा
श्री गणेश सिंह
सांसद, सतना
श्री जनार्दन मिश्र
सांसद, रीवा
श्रीमती रीती पाठक
सांसद, सीधी
की गरिमामय उपस्थिति होगी।
आप सादर आमंत्रित हैं।
D 79121 दिनांक - 5 - 5 - 2016
प्रदेश की पहचान सफेद शेर के
अपने घर में वापस आने और
विश्व की प्रथम व्हाइट टाइगर
सफारी के निर्माण पर हार्दिक बधाई।
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

चन्द्रमा आकाश के कटोरे में पिघलता

उदयन वाजपेयी

चन्द्रमा की किरणें चन्द्रिका।

हम चन्द्रमा से चन्द्रिका के निकलने को सुनते और देखते आए हैं। पर अगर चन्द्रमा से चन्द्रिका निकलने की जगह वह चन्द्रमा को ही साथ लेकर फैले तो कैसा लगेगा?

तब यह लगेगा मानो चन्द्रमा ही चन्द्रिका में फैल रहा है। मानो चन्द्रमा ही पिघल-पिघलकर चन्द्रिका बन रहा है। उसका प्रकाश नहीं फैल रहा, वह खुद - चन्द्रमा खुद ही फैल रहा है। रिद्धिमा के चित्र में चन्द्रमा से चन्द्रिका निकल नहीं रही, चन्द्रमा खुद चन्द्रिका में फैल रहा है। मानो आकाश के नीले कटोरे में शक्कर के बड़े-से दाने जैसा पड़ा चन्द्रमा धीर-धीरे घुलकर आकाश में प्रकाश बनकर फैल रहा हो। यह वह चन्द्रमा नहीं जो हम वर्षों से आकाश में देखते आए हैं, यह वह चन्द्रमा है जो शायद कभी आकाश में वैसा हो सके जैसा रिद्धिमा ने बनाया है।

काश ! आकाश का चन्द्रिका रिद्धिमा के निकलते चन्द्रमा को देख सकता। तब वह अवश्य ही वैसा होना चाहता।

ऊपर कहीं मैं रिद्धिमा को बातूनी बिल्ली तो नहीं कह गया?

चित्रः रिद्धिमा, चौथी, संस्कार वैली, भोपाल

चित्रः विभूति पाण्डे

भेजा ट्राई

1. पंजाब के गाँवों में साझा चूल्हा आम बात है। कुछेक घरों के बीच एक तन्दूर होता है जहाँ लोग अपने-अपने घरों से गुँथा आटा ले जाते हैं और रोटियाँ सेंकते हैं। तो ऐसे ही एक गाँव में तीन लोग इकट्ठा हुए। दो के पास जलाने के लिए लकड़ियाँ थीं। पहले ने दो लकड़ियाँ डालीं और दूसरे ने पाँच। तीसरे के पास लकड़ियाँ नहीं थीं। जाने क्या सोचकर उसने इस मदद के बदले उन दो व्यक्तियों को आठ रुपए दे दिए। उन दोनों ने उस तीसरे व्यक्ति से रुपए नहीं लिए। पर सोचो अगर वे ये रुपए ले लेते तो इन रुपयों का बँटवारा कैसे होता?

2. शिखर और सलिल ने तय किया कि वो एक घण्टे तक गिनेंगे कि सामनेवाले फुटपाथ पर से कितने लोग गुज़रे। शिखर अपने घर के गेट पर खड़े-खड़े गिनता रहा और सलिल फुटपाथ पर आगे-पीछे घूम-घूमकर। किसकी गिनती में ज़्यादा लोग आए होंगे?

3. हम कितनी बातें यूँ ही कह देते हैं। जैसे, अरे साब हर जगह यही होता है। या अरे साब ये सब्ज़ीवाले तो ऐसे ही होते हैं। सोचकर बोलना और यूँ ही बोल देना हमारी बातचीत में शामिल रहता है। तो दिल्ली में रहनेवाले ने एक दिन कहा, साब सभी दिल्लीवाले एकदम झूठे हैं। उनका यह कथन बहुत दिलचस्प है। खास है। उसमें एक गुत्थी है। क्या तुम बता सकते हो कैसी गुत्थी?

उत्तर

1. आठ रुपए को 1 रुपए प्रति लकड़ी के हिसाब से आँकना ठीक न होगा। वो इसलिए कि रुपए 8 लकड़ियों के तीसरे भाग के लिए दिए गए थे। क्योंकि आग का इस्तेमाल तीनों ने बराबर-बराबर किया। यानी आठ लकड़ियों की कीमत 8x3 यानी 24 रुपए आँकी गई थी और एक लकड़ी की कीमत थी 3 रुपए।

अब यह समझना आसान होगा कि किसे कितना मिलना चाहिए। पहली ने 5 लकड़ियाँ यानी 15 रुपए खर्च किए लेकिन इस्तेमाल किए केवल 8 रुपए तो उसे 15-8 यानी 7 रुपए मिलने चाहिए। दूसरी को तीन लकड़ियों के लिए 9 रुपए मिलने चाहिए पर वह 8 रुपए का इस्तेमाल कर चुकी है। तो उसे 1 रुपया ही मिलेगा।

2

दोनों ने आने-जानेवालों की एक ही संख्या गिनी। गेट के पास खड़ा शिखर दोनों आने और जानेवालों को गिनता गया। सड़क पर आगे-पीछे घूमनेवाला व्यक्ति सिर्फ अपने सामने आनेवालों को गिनता है। पर वो दोनों दिशाओं में घूम रहा है इसलिए वह आने व जानेवालों दोनों को गिन रहा है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2015-17

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ ▶
ऊपर से नीचे ▼

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: सुशील शुक्ल